अध्याय-1
हम पंछी उन्मुक्त गगन के

1. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✗
2. (क) पिंजरबद्ध होकर (ख) कनक तीलियों से (ग) बहता जल
   (घ) स्वर्ण श्रृंखला (ङ) अनार के दाने के समान (च) तरु के फुनगी पर
3. (क) (iv) (ख) (ii) (ग) (iii) (घ) (iii) (ङ) (i)
4. (क) स्वतंत्र होने पर पक्षी नीले नभ की सीमा प्राप्त करना और अपनी लाल किरण सी चोंच खोलकर अनार के दाने सदृश तारावलियों को चुगना चाहते हैं।

   (ख) पक्षी इस असीम क्षितिज से इन पंखों की प्रतिस्पद्र्धा करना चाहते हैं। उनके लिए या तो यह क्षितिज मिलन-स्थल बन जाता या उनके साँसों की डोर तन जाती अर्थात् उनका अंत हो जाता है।

   (ग) पक्षी ईश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं कि हमें वृक्ष की डाल पर घोंसला भले ही न बनाने दो, हमारे रहने का आश्रय भले ही उजाड़ दो परन्तु जब आपने हमें पंख दिए हैं तो हमारी उड़ान में विघ्न मत डालो।
5. (क) हम पंछी **उन्मुक्त गगन के**

   पिंजर बद्ध न गा पाएँगे,

   कनक-तीलियों से टकराकर

   पुलकित पंख टूट जाएँगे।

   (ख) ऐसे थे **अरमान की उड़ते**

   नीले नभ की सीमा पाने,

   लाल किरण-सी चोंच खोलकर

   चुगते तारक-अनार के दाने।
6. (क) पखेरू चिड़िया (ख) आकाश नभ (ग) वृक्ष पेड़
   (घ) तारे नक्षत्र (ङ) बाधा अवरोध
7. (क) गगन (ख) शरीर (ग) क्षितिज (घ) हृदय (ङ) निबौरी
   (च) पंख
8. (क) गुटुर गूँ (ख) कुहू-कुहू (ग) काँव-काँव (घ) चाँव-चाँव
9. स्वतंत्रता सबको प्रिय है- चाहे वह मनुष्य हो, पशु हो, या पक्षी। किसी को भी बंधन में या बंद होकर रहना पसंद नहीं है। पक्षियों को भी पिंजरे में बंद रहना अच्छा नहीं लगता। ईश्वर ने उन्हें उड़ान भरने के लिए पंख दिए हैं। पिंजरे में बंद होने पर वे अपने मनोनुकूल उन्मुक्त गगन में विचरण नहीं कर पाते। यद्यपि मर्यादाहीन स्वतंत्रता भी हानिप्रद और विनाश का कारण होती है।
10. मोर भारत का राष्ट्रीय पक्षी है। इसके राष्ट्रीय पक्षी बनने में इसकी विशेषता है कि इसके पंख बहुत ही आकर्षक होते हैं। यह अपनी पंखों की सुंदरता और शरीर की सुंदरता के लिए विश्व में बेजोड़ है। इसका नृत्य बहुत मनमोहक होता है।

अध्याय-2
दादी माँ

1. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✗
2. (क) दाल-चीनी का लेप (ख) किशन (ग) दस रुपये (घ) राघव
   (ङ) कंगन
3. (क) **(ii)** (ख) **(iii)** (ग) **(iv)** (घ) **(iv)**

4. (क) लेखक के मित्र लेखक को कमजोर और ज़रा सी प्रतिकूलता से घबराने वाला कहकर उसका मजाक उड़ाते थे।

(ख) लेखक के बीमार होने पर दादी लेखक के मुँह में किसी अदृश्य शक्तिधारी के चबूतरे की मिट्टी, माथे पर लगाती, उसे पंखा झलती, दालचीनी का लेप लगातीं और बार-बार छूकर ज्वर का अनुमान करती।

(ग) लेखक की दादी रामी पर इसलिए बिगड़ रही थीं क्योंकि रामी की चाची ने दादी से उधार रुपए लिए थे जो उन्हें समय से चुका नहीं पाई थीं।

(घ) रामी की चाची दादी माँ को आशीर्वाद इसलिए दे रही थीं कि दादी बहुत दयालु थीं। उन्होंने दिया हुआ उधार तो माफ़ ही कर दिया, दस रुपए और दिया कि बेटी की शादी ठीक से करना।

(ङ) (i) दादी माँ एक धर्मभीरु और दयालु महिला थीं।

(ii) उनमें सबके लिए

(च) गाँवों में स्त्रियाँ विवाह से चार-पाँच दिन पहले ही रात भर गीत गाती हैं। विवाह की रात भी अभिनय होता है जिसमें विवाह से लेकर पुत्रोत्पत्ति तक के सभी दृश्य दिखाए जाते हैं।

(छ) दादा जी की मृत्यु हो जाने के बाद छली-कपटी मित्र जो मुँह पर तो तारीफ़ करते परंतु आड़ में गला काटने के फ़िक्र में रहते, ऐसे दोस्तों ने घर की आर्थिक स्थिति को कमजोर कर दिया। जो थोड़ी-बहुत चल भी रही थी, वह दादा जी के मरने के बाद पिता जी द्वारा उनकी क्रिया में खर्च हो गया। घर की हालत और बदतर हो गई।

5. (क) वि + श्वास (ख) अनुप + स्थिति (ग) अ + प्रिय
(घ) अ + दृश्य (ङ) अध + गली

6. (क) कठिन + ता = कठिनता (ख) प्रतिकूल + ता = प्रतिकूलता (ग) शीतल + ता = शीतलता
(घ) साफ़ + आई = सफ़ाई (ङ) मामा + ई = मामी

7. (क) गरमियाँ (ख) चादरें (ग) छुट्टियाँ (घ) चींटियाँ (ङ) जड़ें
(च) घासें

8.

	वैसाख	जेष्ठ
आषाढ़	सावन (श्रावण)	भाद्रपद (भादों)
आश्विन (क्वार)	कार्तिक	अगहन
पौष	माघ	फाल्गुन

9. हम अपने दादा-दादी का बहुत आदर करते हैं। दादा-दादी भी हमें बहुत प्यार करते हैं। प्रत्येक दादा-दादी अपने पोते-पोतियों से प्यार करते हैं। दादी हमारी धर्मभीरु महिला हैं। वे हमें धार्मिक, ऐतिहासिक व प्रेरक कहानियाँ सुनाती हैं। दादा जी भाभा परमाणु अनुसंधान विभाग से सेवानिवृत्त अधिकारी हैं। हमें विज्ञान से सम्बन्धित कहानियाँ सुनाते हैं। मुझे भी एक वैज्ञानिक बनना है।

अध्याय-3
हिमालय की बेटियाँ

1. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✗ (ङ) ✓

2. (क) लोकमाता कहकर पुकारा है। (ख) ब्रह्मपुत्र, सिंधु
(ग) हिमालय को ससुर और समुद्र को दामाद कहा गया है। (घ) इस पाठ के लेखक हैं—नागार्जुन।

3. (क) (i) (ख) (ii) (ग) (ii) (घ) (iv) (ङ) (iii)

4. (क) संभ्रान्त (ख) हिमालय
(ग) सिंधु, ब्रह्मपुत्र, सतलुज, व्यास, चेनाब, झेलम, काबुल (कुभा), कपिशा, गंगा, यमुना, सरयू, गंडक, कोसी
(घ) काका कालेलकर (ङ) बहन

5. (क) नदियों को दूर से देखने पर वे बड़ी गंभीर, शांत एवं अपने-आप में खोई हुई लगती हैं। ये नदियाँ दूर से एक संभ्रान्त महिला-सी दिखाई देती हैं।

(ख) हिमालय से निकलते समय ये नदियाँ दुबली-पतली दिखाई देती हैं परन्तु यही गंगा, यमुना, सतलुज समतल मैदानों में उतर कर इतनी विशाल कैसे हो जाती हैं। यह देख बड़ा आश्चर्य होता है।

(ग) कालिदास ने अपने विरही यक्ष के मेघदूत द्वारा यह संदेश कहा था–'वेत्रवती (बेतवा) नदी को प्रेम का प्रतिदान देते जाना। तुम्हारी यह प्रेयसी तुम्हें पाकर अवश्य प्रसन्न होगी। यहाँ वेत्रवती को मेघ की प्रेयसी कहा है।'

(घ) काका कालेलकर ने नदियों को 'लोकमाता' कहा क्योंकि यही नदियाँ मैदानों में आकर धन-धान्य की वर्षा कर समस्त जीव जगत का पोषण करती हैं। ये नदियाँ पर्वतीय प्रदेश से भाद के साथ उतरती हैं और मैदानी भाग को उपजाऊ बनाती हैं। इससे यहाँ अनेक खाद्य फ़सलें तैयार होती हैं।

(ङ) सिंधु और ब्रह्मपुत्र का नाम लेते ही हमें रावी, सतलुज, व्यास, चेनाब, झेलम, काबुल (कुभा), कपिशा, गंगा, यमुना, सरयू, गंडक, कोसी आदि हिमालय की छोटी-बड़ी सभी बेटियाँ आँखों के सामने नाचने लगती हैं।

(च) हिमालय से निकलते समय नदियाँ बरफ़ से ढकी पहाड़ियाँ, छोटे-छोटे पौधों से भरी घाटियाँ, बंधुर अधित्यकाएँ, सर सब्ज उत्पत्यकाओं से होती हुई, अपनी लीला दिखाती हुई दूर मैदानों की ओर निकल जाती हैं।

6.

(क) संभ्रान्त	महिला	(ख) चंचल	नदी	(ग) समतल	मैदान
(घ) घना	जंगल	(ङ) मूसलाधार	वर्षा		

7.

हिमालय	बेटियाँ	आदर
गंगा	नदी	बूढ़ा
कालिदास	समुद्र	ममता
सिंधु		विस्मय और शांत

8.

(क) यमुना	(ख) चेनाब	(ग) कपिशा	(घ) सरयू	(ङ) गंडक
(च) कोसी	(छ) रावी	(ज) समुद्र		

9.

नई दिल्ली, भारत
दिनांक–00 जुलाई, 2019

प्रिय रोहन,

सप्रेम नमस्ते

भाई, यहाँ पर सब कुशल है, सपरिवार तुम्हारी कुशलता की ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ। भाई, जब तुम भारत में आए थे तो देखा था, यहाँ नदियों का जल कितना गंदा था। आजकल नदियों की सफाई का कार्यक्रम बहुत जोरों पर है। सरकार तो यह कार्य करा ही रही है, अनेक सामाजिक-धार्मिक संगठन भी इस सफाई अभियान में सहयोग कर रहे हैं। जन समूह भी इस कार्य में लग गया है। आशा है हमारी नदियाँ जल्दी ही प्रदूषण मुक्त होंगी। भाई, तुम्हारी पढ़ाई कैसी चल रही है? आदरणीय चाचा-चाची जी को हमारा प्रणाम कहना। पत्र के उत्तर की प्रतीक्षा में–अ ब स दिल्ली

11. हमें काका कालेलकर का नदियों के लिए लोकमाता सम्बोधन उपयुक्त प्रतीत होता है। नदियाँ सभी जीवों के पोषण का माध्यम हैं। ये नदियाँ पर्वतीय क्षेत्रों से अनेक प्रकार की वनस्पतियों की सड़ी हुई गाद लेकर मैदानों में उतरती हैं और ज़मीन की उर्वरा शक्ति को बढ़ाती हैं जिससे प्रचुर मात्रा में खाद्यान्न उत्पन्न होता है। इन्हीं नदियों की कृपा से जंगली लकड़ियाँ, जड़ी-बूटियाँ प्राप्त होती हैं जो औषधीय आवश्यकता को पूरा करती हैं। इस तरह नदियाँ सही अर्थों में लोकमाता हैं।

12. नदियों से होने वाले लाभ–

नदियों से हमें अनेक लाभ हैं इसी कारण इन्हें माता की संज्ञा दी गई है। नदियों से हमें पेय जल प्राप्त होता है। अनेक शहरों-गाँवों में पेय जल का एकमात्र साधन नदियाँ ही हैं। नदियों के जल से अनेक नहरें निकाली गई हैं जिनका जल सिंचाई के काम आता है। इसके अतिरिक्त नदियों द्वारा पर्वतीय प्रदेशों से बहाकर लाई हुई गाद मैदानी भाग को उपजाऊ बनाती है। इसी से यहाँ भारी मात्रा में खाद्यान्न उत्पन्न होता है।

अध्याय-4
कठपुतली

1. (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✓

2. (क) धागे से (ख) उसकी साथी अन्य कठपुतलियों ने। (ग) अपने पाँवों पर (घ) कठपुतली

3. (क) (iv) (ख) (iii) (ग) (iv) (घ) (ii)

4. (क) कठपुतली अपने पाँवों पर खड़ा होना चाहकर भी इसलिए खड़ी नहीं हो पाती क्योंकि वह धागे से बँधी हुई है, स्वतंत्र नहीं है।

   (ख) पहली कठपुतली की बात उसकी साथी कठपुतलियों को भी अच्छी लगी। वे भी स्वतंत्र होकर अपने पैरों पर खड़ा होना चाहती हैं।

   (ग) पहली कठपुतली अपने बंधन, अपनी परतंत्रता के विद्रोह तो कर देती है परन्तु फिर सोच में पड़ जाती है कि उसे इसके लिए बहुत सोच-समझकर कदम उठाना चाहिए जिससे बाद में पश्चाताप न करना पड़े।

   (घ) प्रस्तुत कविता में कवि ने कठपुतलियों के माध्यम से उन लोगों की परतंत्रता की पीड़ा को व्यक्त करते हुए उनकी मुक्ति या स्वतंत्रता की इच्छा को अभिव्यक्ति प्रदान की है जो दूसरे के इशारे पर चलने को विवश हैं, उनकी अपनी कोई इच्छा ही नहीं हो सकती। उन्हें कवि कहता है कि अपने को सक्षम बनाकर ही अपनी परतंत्रता के खिलाफ़ विद्रोह करना उचित है जिससे पश्चाताप न करना पड़े।

   (ङ) इस कविता से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि अपनी परतंत्रता के बंधन से मुक्त होने के लिए हमें अवश्य कदम उठाने चाहिए परन्तु बहुत सोच-समझ कर, जिससे अपने लक्ष्य में सफल हो जाओ।

5. (क) हाथ-पाँव फूलना – घबरा जाना – अचानक घर पर इतनी भीड़ देख मेरे हाथ-पाँव फूल गए।

   (ख) पाँव लड़खड़ाना – पथ-भ्रष्ट होना, नशे में धुत्त होना– (i) धन के अहंकार में मनुष्य के पैर अकसर लड़खड़ा ही जाते हैं। (ii) बहुत अधिक मदिरा पान से मोहन का पैर लड़खड़ाने लगा।

6. (ख) सोनपरी (ग) हथकड़ी (घ) मटमैला

7.

ये	मेरे	इन्हें	मुझे
मेरे	हमें	अपने	मेरे

8. आज की वैज्ञानिक प्रगति के युग में कठपुतली खेल का महत्व नहीं रह गया है क्योंकि कठपुतली का प्रदर्शन नव जागृति के लिए, मनुष्य को जगाने के लिए किया जाता था क्योंकि इसके लिए दूसरा माध्यम नहीं था। अब आज इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, चलचित्र, रंगीन फोटोग्राफ़ी के विकसित हो जाने से कठपुतली कला का औचित्य नहीं प्रतीत होता।

9. सन् 1942 में स्वतंत्रता आंदोलन नेतृत्वविहीन था। गाँधीजी के 8 अगस्त, 1942 को अंग्रेजो, भारत छोड़ो का नारा देते हुए लोगों को करो या मरो का नारा दिए जाने के बाद महात्मा गाँधी और प्रमुख नेताओं को गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया था। इसलिए आन्दोलनकारियों के समझ में जो आया, उन्होंने किया। जिन्हें सत्याग्रह आंदोलन में विश्वास नहीं था, वे भी इस आंदोलन में कूद पड़े और विध्वंसात्मक कार्य करने लगे। अंतत: अंग्रेज सरकार ने इस आंदोलन को निर्ममतापूर्वक कुचल दिया। इस आंदोलन के सक्रिय नेता थे–जयप्रकाश नारायण अरुणा आसफ अली, लाल बहादुर शास्त्री, युसुफ मेहर अली, राम प्रसाद बिस्मिल आदि।

10. किसी विद्वान महापुरुष ने कहा है– 'पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं।' यह सही है कि किसी के आश्रय में रहने वाले को सुख नहीं मिलता। एक तोते को पिंजरे में बंद करके अनेक प्रकार के मेवे, फल आदि खाने को उसे दिया जाता है फिर भी वह हमेशा अवसर की तलाश में रहता है कि कब पिंजरे का कपाट खुले और वह पिंजरे से मुक्त हो उन्मुक्त गगन में उड़ान भरे। स्वतंत्र रहने पर ही मनुष्य की बुद्धि और विवेक कार्य करते हैं। परतंत्रता एक अभिशाप है।

अध्याय-5
मिठाईवाला

1. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✓

2. (क) खिलौनेवाला बहुत मीठी आवाज़ में अपने खिलौने बेचता था।
   (ख) चुन्नू और मुन्नू के पिता का नाम विजय तथा माता का नाम रोहिणी था।
   (ग) तीन पैसे में।
   (घ) बच्चे पैसे लेकर खिलौने का मोलभाव करते थे।
   (ङ) क्योंकि खिलौने बहुत सस्ते थे।

3. (क) (iv) (ख) (i) (ग) (ii) (घ) (ii) (ङ) (iv)

4. (क) मिठाईवाला कुछ-कुछ महीनों बाद अलग-अलग सामान इसलिए बेचता है कि नया सामान पाकर बच्चे बहुत प्रसन्न हो उठते हैं। उनकी प्रसन्नता में वह अपने दिवंगत बच्चों की छवि देखता है और उसे संतोष की अनुभूति होती है।
   (ख) मिठाईवाले का कंठ बहुत मधुर था। उसकी वाणी में वात्सल्य टपकता था। उसे बच्चों से बहुत प्यार था। वह अपने बच्चों की छवि इन्हीं बच्चों में ढूँढ़ता है।
   (ग) विजय बाबू की बात-'तुम लोगों की झूठ बोलने की आदत होती है। देते होगे सभी को दो-दो पैसे में, पर एहसान का बोझ मेरे ही ऊपर लाद रहे हो।' यह बात सुन मुरलीवाला हैरान रह गया।
   (घ) मिठाईवाले ने अपनी मिठाई की कई खूबियाँ बताते हुए कहा—ये नए तरह की मिठाइयाँ हैं—रंग-बिरंगी, कुछ-कुछ खट्टी, कुछ-कुछ मीठी, ज़ायकेदार, बड़ी देर तक मुँह में टिकने वाली हैं।
   (ङ) मिठाईवाला अपना सामान पैसे कमाने या लाभ उठाने के उद्देश्य से नहीं बेचता था। उसे बच्चों को अपने सामान देकर संतोष, धीरज और असीम सुख की अनुभूति होती थी। वह इन्हीं बच्चों में अपने दोनों प्यारे बच्चों को ढूँढ़ता था, जो अब इस दुनिया में नहीं थे। इसीलिए अपना सामान सस्ते दामों में बेचता था।
   (च) खिलौनेवाले के मादक, मधुर ढंग से गाकर जब वह 'बच्चों को बहलाने वाला खिलौनेवाला' शब्द मुँह से निकालता तो सुनने वाले एकदम अस्थिर हो उठते' उसके स्नेह से भरे कंठ से फूटा हुआ गान सुनकर निकट के मकानों में हलचल मच जाती।
   (छ) मिठाईवाला बहुत अमीर और प्रतिष्ठित व्यक्ति था। उसका भरा-पूरा परिवार था। उसके दो प्यारे बच्चे भी थे। दैव का संयोग कि उसके दोनों बच्चे असमय उसका साथ छोड़ गए। वह सामान बेचने के बहाने सभी बच्चों में अपने बच्चों की छवि देखता था। इसीलिए वह सभी बच्चों से बहुत प्यार करता था।
   (ज) इस कहानी से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि दूसरों को प्यार और खुशी देने से अपना दुख कम हो जाता है। जैसे इस पाठ में मिठाईवाले के बच्चे और पत्नी की असमय मुत्यु के बाद वह दूसरे बच्चों को जब उनकी पसंद का सामान लाकर बेचता है तो उसको आत्मिक सुख और संतोष प्राप्त होता है।

5. (क) युवक (ख) पिता (ग) दादा (घ) पुरुष (ङ) पति
   (च) बच्चियाँ (छ) घोड़ा (ज) नौकरानी

6.

मूलशब्द	प्रत्यय	मूलशब्द	प्रत्यय	मूलशब्द	प्रत्यय
(क) मिठाई	वाला	(ख) संसार	इक	(ग) प्रतिष्ठा	इत
(घ) गंभीर	ता	(ङ) पकड़ना	कर	(च) मुस्कराना	आहट

7. (क) अस्थिर (ख) असीम (ग) विज्ञ (घ) पूर्व घटित (ङ) विधुर

8. (क) प्रति + एक (ख) सम् + सार (ग) सम् + तोष
   (घ) अति + अधिक

9. (क) ईश्वर मनुष्य में **अंतर्व्यापी** है।
(ख) दीपक की बात सुन मिठाईवाला **अप्रतिम** हो उठा।
(ग) समाज में अनेक **दस्तूर** ऐसे हैं जो समय के विपरीत है।
(घ) हमें **विश्वास** है कि रोहिणी मिठाईवाले की बात सुनकर संतुष्ट हो गई होगी।
(ङ) रोहिणी मिठाईवाले की बात सुनने को **उत्सुक** हो उठी।

10. जब नगरों, बाज़ारों एवं गाँवों के आस-पास शॉपिंग मॉल नहीं खुले थे, तब गली-मुहल्ले वाले अकसर अपने दैनिक जीवन में उपयोगी वस्तुओं को फेरीवालों से ले लिया करते थे। ये फेरीवाले अनेक प्रकार की वस्तुएँ बेचते थे। फेरी लगाकर कपड़े बेचनेवाला, मसाला-नमक-हल्दी बेचने वाला, सब्ज़ी बेचने वाला, हींग बेचने वाला, बिसावी का सामान बेचने वाला-ये तरह-तरह के फेरीवाले थे जो प्रतिदिन घर में प्रयोग होने वाली वस्तुएँ बेचा करते थे। अब जगह-जगह बाज़ारों में शापिंग मॉल खुल गए हैं। यद्यपि आज भी सब्ज़ी, बिसावी का सामान बेचने वाले अकसर फेरी लगाकर समान बेचते हैं।

11. दूसरों को प्यार और खुशी देने से अपने मन को संतोष और अपार खुशी मिलती है। दूसरों के सुख-दुख में भागीदार होने से, दूसरों के कष्ट को अपना कष्ट समझ उसके निवारण करने में अपूर्व धीरज, संतोष प्राप्त होता है। यहाँ तक देखा जाता है कि कितने लोग इस प्रकार की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए अपना नुकसान उठाने को भी अपना सौभाग्य मानते हैं। इस प्रकार का कार्य करने वाले इस प्रकार के भलाई-पूर्ण काम करने में अपना दुख भूल जाते हैं।

12. रोहिणी का परदे के पीछे खड़ी होकर बात करना उसके पिछड़ेपन की ओर संकेत करता है। आजकल शहरों में स्त्रियाँ आमने-सामने खड़े होकर बात करती हैं। परंतु गाँवों में एवं रुढ़िवादी परिवारों में आज भी परदा प्रथा का पालन मुस्तैदी से किया जाता है। इसे संस्कारगत आचरण मानते हुए सम्मान के तौर पर ग्रहण किया जाता है। हमारे विचार में यह समयानुकूल नहीं है। रोहिणी के समान आचरण आज पिछड़ा होने का द्योतक है। यह नारी स्वतंत्रता का हनन करने वाला है। यह प्रगति में बाधक तो है ही, समाज और देश की प्रगति में भी बाधक है।

अध्याय-6
रक्त और हमारा शरीर

1. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✓

2. (क) दिव्या (ख) सूक्ष्मदर्शी से (ग) एनीमिया (रक्ताल्पता) (घ) प्लाज्मा
(ङ) सफ़ेद कणों को रोगाणुरोधक कणों के रूप में जाना जाता है।

3. (क) (ii) (ख) (iv) (ग) (i) (घ) (iv) (ङ) (iii)
(च) (i)

4. (क) जब शरीर को उचित मात्रा में प्रोटीन, लौह तत्व और विटामिन के रूप में पर्याप्त पौष्टिक आहार नहीं मिल पाता तब एनीमिया हो जाता है। एनीमिया का अर्थ है शरीर में रक्त की कमी। इसके लक्षण हैं-हर समय थकान महसूस करना, किसी काम में मन न लगना, भूख न लगना आदि।
(ख) लाल रक्त कणों की बनावट बालूशाही के समान गोल और बीच में चपटी और दोनों तरफ़ से अवतल होती है। एक मीलीमीटर रक्त में लाल रक्त कणों की संख्या चालीस से पचपन लाख तक होती है।
(ग) पौष्टिक आहार में प्रोटीन, लौह तत्व और विटामिन की उपयुक्त मात्रा होना आवश्यक है। ये पौष्टिक तत्व हरी सब्ज़ी, फल, दूध, अंडा और मांस में पाये जाते हैं।
(घ) पेट में कीड़े न हों, इसके लिए हमें पूर्ण रूप से साफ़-सफ़ाई बरतनी चाहिए, साफ़-सफ़ाई के साथ बने आहार ग्रहण करने चाहिए। भोजन करने से पूर्व हाथ अच्छी तरह धो लेना चाहिए। शुद्ध जल का प्रयोग पीने के लिए करना चाहिए।
(ङ) सफ़ेद कणों को शरीर का वीर सिपाही कहा जाता है क्योंकि ये सफ़ेद कण शरीर पर रोगाणुओं के आक्रमण को रोकते हैं और उनसे डटकर मुकाबला करते हैं। जहाँ तक संभव हो पाता है ये सफ़ेद कण रोगाणुओं को शरीर में नहीं प्रवेश करने देते। ये रोगों से हमारी रक्षा करते हैं।

(च) अधिक रक्त-स्राव होने पर चोट के स्थान पर साफ़ कपड़ा बाँध देना चाहिए जिससे दबाव के कारण रक्त बहना कम हो जाता है एवं तुरंत डॉक्टर के पास ले जाना चाहिए।

(छ) ब्लड बैंक की स्थापना इसलिए की गई है कि वहाँ पर सभी रक्त समूह के रक्त मिल जाते हैं। इस प्रकार के ब्लड बैंक लगभग प्रत्येक बड़े अस्पतालों में स्थापित हैं।

(ज) एनीमिया रोग होने का मुख्य कारण है—पौषिक आहार की कमी होना।
एक दूसरा कारण है— पेट में कीड़ों का होना। ये कीड़े प्राय: दूषित जल पीने से और दूषित खाद्य पदार्थ से शरीर में प्रवेश करते हैं।

(झ) बिंबाणु हमारे शरीर में रक्त स्त्राव को रोकने का काम करते हैं। बिंबाणु शरीर में चोट लगने पर रक्त जमाव क्रिया में सहायता करते हैं। रक्त में स्थित प्लाज्मा में एक प्रकार की प्रोटीन होती है जो रक्तवाहिका की कटी-फटी दीवार में मकड़ी के जाले के समान एक जाला बुन देती है। बिंबाणु इस जाले में चिपक जाते हैं और दीवार में आई दरार भर जाती है।

5. (क) तुम्हारे जीवन में उन्नति बार-बार दस्तक दे रही है। तुम न समझो यह तुम्हारी कमी है।

(ख) एकाएक भाई साहब के आगमन सुन मैं आश्चर्य से उछल पड़ा।

(ग) जब मैं मोहन के यहाँ पहुँचा, वह गुमसुम सोच में डूबा हुआ था।

(घ) पुत्र के विद्यालय में प्रथम आने पर पिता उसकी पीठ ठोकने लगे।

6. (क) संतुलन + इत (ख) कम + ज़ोर (ग) नि: + आधार
(घ) आवश्यक + ता

7. कमज़ोर सफ़ेद आवाज़ ज़रूरत
साफ़ सब्ज़ी प्लाज़्मा काफ़ी

8. मरीज – डॉक्टर साहब, नमस्ते।

डॉक्टर – कहिए, आपको क्या तकलीफ़ है?

मरीज – डॉक्टर साहब, कल रात से हमारे पेट में दर्द है। थोड़ी देर बाद हल्का बुखार भी हो आया।

डॉक्टर – आपने रात में भोजन में क्या लिया था?

मरीज – डॉक्टर साहब, कल दिन का थोड़ा चावल और सब्ज़ी पड़ी थी। शाम को ड्युटी पर से आया, भूख बहुत लगी थी। वही आकर खा लिया। प्यास लगी थी, पानी पी लिया। दो घंटे बाद पेट में दर्द होने लगा, फिर बुखार हो गया।

डॉक्टर – लगता है food poisoining है। आप यह जाँच करा लें। तब तक यह दवा लें। रिपोर्ट कल दिखाएँ।

9. यदि स्त्री और पुरुष दोनों के रक्त एक ही रक्त समूह के हैं तो पुरुष के रक्त स्त्री को भी चढ़ाए जा सकते हैं। यदि पुरुष के रक्त के गुण स्त्री के रक्त के समान हैं तो दोनों में से किसी का भी रक्त एक दूसरे को चढ़ाया जा सकता है। रक्त में स्त्री-पुरुष का भेद नहीं होता, रक्त समूह की विशेषता होती है।

10. रक्त समूह को चार वर्गों में बाँटा गया है। वे इस प्रकार हैं– (i) A समूह (ii) B समूह (iii) AB समूह (N) O समूह। रक्त समूह जीन द्वारा अपने माता-पिता से प्राप्त होता है। प्रत्येक समूह या तो Rhd धनात्मक या Rhd ऋणात्मक होता है, जिसके अनुसार कुल आठ रक्त सूमह होते हैं। हमारा रक्त समूह AB है।

अध्याय-7

पापा खो गए

1. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✓

2. (क) इस नाटक में कुल सात पात्र हैं।

(ख) पेड़ ने पत्तियों का कोट पहना हुआ है।

(ग) खंभा (घ) परीक्षित (ङ) कोट

3. (क) (ii) (ख) (iii) (ग) (iv) (घ) (ii) (ङ) (iv)

(च) (ii) (छ) (i)

4. (क) खंभे ने कहा- मेरी तबीयत लोहे की है, जो मैं बीमार नहीं पड़ता वरना कोई भी इस तरह ठंडी़ बारिश, धूप में खड़ा रहे तो ज़रूर बीमार पड़ जाए। खंभे को अपना काम इसलिए पसंद नहीं है कि वह न जाने कितने दिनों से इसी तरह खड़ा है। उसकी स्थिति में कोई बदलाव नहीं आया। चुंगी की नौकरी भी कोई नौकरी है!

(ख) खंभा पेड़ के बिलकुल निकट खड़ा था। पेड़ ने उससे दोस्ती करने की बहुत कोशिश की परंतु खंभा ने पेड़ से संबंध बनाने की कोई कोशिश नहीं की। एक दिन तेज़ हवा के झोंके में खंभा गिर गया परन्तु पेड़ ने उसे गिरने से बचा लिया। यद्यपि पेड़ को बहुत चोट आई। तभी से दोनों में दोस्ती हो गई।

(ग) हेडमास्टर ने गोविंद राव जी को पत्र लिखा था। जिसमें उनके पुत्र परीक्षित की शिकायत की थी और तुरंत मिलने के लिए लिखा था।

(घ) बच्चे उठानेवाले आदमी ने एक सुंदर बालिका को उसके घर से उठा लिया था जब वह गहरी नींद में सो रही थी।

(ङ) नाटक के सभी पात्र लड़की को उसके घर पहुँचाना चाहते थे परंतु उसके घर का पता न ज्ञात होने के कारण उसे उसके घर न पहुँचा सके।

(च) लड़की को उसके घर पहुँचाने के लिए खंभा, लेटरबॉक्स, कौवा सभी ने विचार कर कहा–प्रात: पेड़ राजा अपनी छाया प्रदान करेंगे जिससे यह अच्छी तरह सो ले। खंभे को थोड़ा-सा एक तरफ़ झुकने को कहा गया जिससे पुलिस को लगे यहाँ एक्सीडेंट हो गया है। वह आएगी। बच्ची को देखेगी तो उसे उसके घर पहुँचाएगी। यह पुलिस की ज़िम्मेदारी है। कौवा लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए लगातार काँव-काँव करते रहेंगे। लेटरबॉक्स लड़की का चित्र बने पोस्टर पर लिखता है-'पापा खो गए'। आप लोगों में से किसी को इस प्यारी बच्ची के पापा मिल जाएँ तो उन्हें जितनी जल्दी हो सके यहाँ लाएँ।

(छ) लेटरबॉक्स ऐसा इसलिए कहता है कि- बच्चों को क्या मालूम कि उनके पापा कितने परिश्रम से कमाकर बच्चों की फीस, किताबें-कॉपियों में पैसा खर्च करते हैं, और बच्चे उन्हें बरबाद करते हैं, घूमते हैं, कक्षा से भागकर मौज-मस्ती करते हैं। यह नासमझी है।

5. (क) राकेश, यदि तुम नहीं मानोगे तो तुम्हारा **होश ठिकाने लगाने** के लिए कुछ करना होगा।

(ख) पुलिस को **चकमा देकर** चोर भागने में सफल हो गया।

(ग) सामने साँप को देखकर मैं **थर-थर काँपने** लगा।

(घ) आज पुलिस बार-बार इधर चक्कर लगा रही है। **दाल में कुछ काला** लग रहा है।

6. (क) तिमिर अंधकार

(ख) तरु विटप

(ग) आवास गृह

(घ) वर्षा बरसात

(ङ) वायु अनिल

(च) नभ गगन

(छ) दिवस वासर

7. (क) दिन (ख) साँसें (ग) चिट्ठी (घ) आँखें (ङ) नज़रें

(च) लड़कियाँ (छ) आवाज़ें (ज) दिशाएँ

8. (क) स्त्रीलिंग (ख) स्त्रीलिंग (ग) पुल्लिंग (घ) स्त्रीलिंग (ङ) पुल्लिंग

(च) स्त्रीलिंग (छ) स्त्रीलिंग (ज) पुंल्लिग (झ) पुंल्लिग (ञ) स्त्रीलिंग

9. मेरी तबीयत ही लोहे की है जो मैं बीमार नहीं पड़ता; वरना कोई भी इस तरह बारिश, ठंडी, धूप में खड़ा रहे, तो ज़रूर बीमार पड़ जाए। पड़ जाएगा या नहीं। कितने दिन बीत गए, कितनी रातें, लेकिन मैं बराबर इसी तरह खड़ा हूँ। छे! चुंगी की यह नौकरी भी कोई नौकरी है? क्यों लाल ताऊ, आज किस-किसके पत्र चोरी-छिपे पढ़ते रहे।

10. यदि हमें कोई बच्चा इस प्रकार खोया हुआ मिल जाए, तो सबसे पहले हम उससे उसके घर का पता, उसके माता-पिता का नाम पूछेंगे। यदि वह बताने में असमर्थ होगा तो हम उसके लिए अखबार, टेलीविज़न पर उसका फोटो दिखाकर उसके माँ-बाप को सूचित करने का प्रयास करेंगे। हम बच्चे की फोटो इंटरनेट पर, फेसबुक पर डालेंगे जिससे बच्चे के विषय में उसके माता-पिता को जानकारी प्राप्त हो सके।

11. यदि हम घर पर हैं तो सबसे पहले अपने घर की सुरक्षा के लिए घर के चारों ओर सी. सी. टी. वी. कैमरा लगवाएँगे जिससे घर में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति की छवि हमें घर में बैठे ही दिखाई पड़ जाए। यदि संदिग्ध व्यक्ति है तो हम तुरंत पुलिस को सूचित करेंगे।

    घर से बाहर रहने पर हम अपना वाहन या स्वयं सड़क पर बायीं तरफ़ चलेंगे। लाल बत्ती होने पर सड़क पार नहीं करेंगे। असामाजिक तत्वों से मुठभेड़ होने पर हम साहसपूर्वक सामना करेंगे और शोर मचाएंगे। इस प्रकार हम अपने सुरक्षित रहने का उपाय करेंगे।

12. **पेंसिल**–क्यों कलम बहन, तुम आज बहुत सुस्त पड़ी हो। तबियत तो ठीक है न!

    कलम–बहन, तबियत तो ठीक है, परंतु आज हमारी ऊर्जा खतम हो गई है इसलिए सुस्ती आ गई है।

    पेंसिल–बहन, मैं तो हरदम ऊर्जावान रहती हूँ, परंतु यह आदमी इतना स्वार्थी है कि हरदम हमें काटता रहता है।

    कलम–बहन, आदमी की बात न करो। वह तो इतना स्वार्थी है कि मुझे ज्यों ही सुस्त देखता है, बाहर निकाल देता है। मेरे कामों की तनिक भी याद नहीं करता।

    पेंसिल–मैं तो यही सोचती हूँ। कैसे इन स्वार्थियों के स्वार्थ पूरा करूँ बिना अपना नुकसान उठाए।

    कलम–बहन, है तो बहुत स्वार्थी जाति यह मनुष्य परंतु दयावान भी है, कोई नया तरीका अवश्य निकाल लेगा जिससे हमें-तुम्हें कष्ट नहीं होगा।

अध्याय-8

शाम-एक किसान

1. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✓

2. (क) अँगीठी के समान (ख) भेड़ों के झुंड के समान (ग) सूरज की
   (घ) पहाड़ के घुटनों (ङ) पहाड़

3. (क) (ii) (ख) (iv) (ग) (ii) (घ) (iii) (ङ) (iii)

4. (क) कवि ने पहाड़ को किसान के समान बताते हुए कह रहा है कि पहाड़ रूपी किसान आकाश रूपी साफ़ा बाँधकर सूरज रूपी चिलम को मुँह से खींचता हुआ बैठा है।

   (ख) कवि ने पलाश के फूलों को जलती अँगीठी बताया है क्योंकि पलाश के फूल दहकते अंगारे के समान लाल होते हैं।

   (ग) अंधकार सुदूर पूर्व दिशा में भेड़ों के झुंड-सा सिमटा बैठा है और ज्यों ही पश्चिम दिशा में सूर्य रूपी चिलम औंधी होगी, सिमटा अंधेरा चारों ओर फैल जाएगा।

   (घ) अचानक मोर बोल उठता है मानो किसी ने आवाज़ लगाई-'सुनते हो'। इसके बाद यह दृश्य घटना में बदल जाता है। चिलम औंधी हो जाती है, आग बुझ जाती है, धुआँ उठने लगता है। सूरज डूब जाता है और सर्वत्र अंधेरा छा जाता है।

   (ङ) 'शाम-एक किसान' कविता में सर्वेश्वर दयाल सक्सेना जी ने प्रकृति का मानवीकरण किया है। इस कविता में उन्होंने प्रकृति के संध्याकालीन दृश्य को किसान के माध्यम से प्रस्तुत किया है। इस कविता में कल्पना की प्रधानता है। कवि कल्पना के माध्यम से ही प्रकृति को मनुष्य रूप में प्रस्तुत किया है और इसके लिए उपमा अलंकार का प्रयोग किया है।

   (च) कवि ने प्रस्तुत कविता में पहाड़ का मानवीकरण करते हुए किसान के रूप में चित्रित किया है। वह अपनी कल्पना के द्वारा पहाड़ के ऊपर आकाश को पहाड़रूपी किसान के साफ़ा के रूप में की है जो सूर्य रूपी चिलम को मुँह में लगाए हुए है।

   (छ) कवि ने किसान के रूप में जाड़े की शाम का प्राकृतिक दृश्य अपनी कल्पना द्वारा चित्रित किया है। इस प्राकृतिक दृश्य में पहाड़ एक बैठे हुए किसान की तरह है जिसके सिर पर आकाश साफ़े के समान, पहाड़ के नीचे बहती हुई नदी-घुटनों पर रखी चादर-सी, पलाश के पेड़ों पर खिले लाल पुष्प जलती अंगीठी के सदृश, पूर्व क्षितिज पर घना होता अंधकार झुंड में बैठी भेड़ों जैसा और पश्चिम दिशा में डूबता सूरज चिलम पर सुलगती आग की तरह दिखाई दे रहा है। यह पूरा दृश्य शांत है। एकाएक चिलम औंधी हो जाती है, सूरज डूब जाता है और सर्वत्र अंधेरा फैल जाता है।

5. आकाश का **साफ़ा बाँधकर**

सूरज की चीलम खींचता

बैठा है पहाड़,

घुटनों पर **पड़ी है नदी चादर-सी,**

पास ही दहक रही है

पलाश के **जंगल की अँगीठी**

अंधकार दूर पूर्व में

सिमटा बैठा है भेड़ों के गल्ले-सा।

6. (क) नभ — गगन
   (ख) रवि — भानु
   (ग) पर्वत — गिरि
   (घ) सरिता — तरंगिणी
   (ङ) वन — कानन

7. (क) नदियाँ (ख) भेड़ें (ग) चादरें (घ) आवाज़ें (ङ) रातें
   (च) चिड़ियाँ (छ) अँगीठियाँ (ज) चट्टानें

8. (क) पूर्णविराम (ख) कॉमा (ग) अर्द्ध विराम (घ) प्रश्नवाचक चिह्न
   (ङ) संबोधन (विस्मय सूचक) (ज) उद्धरण चिह्न

9. (क) पाताल (ख) प्रकाश (ग) पश्चिम (घ) दूर (ङ) सुबह
   (च) सूर्योदय

10. चित्र विद्यार्थी बनाएं

    सूर्य जब दिन में अपनी प्रखर किरणों द्वारा संसार को गरमी प्रदान करते हुए दिनभर का थका-हारा अपने घर अस्ताचल को प्रस्थान करने वाला होता है, उस समय प्राकृतिक दृश्य बहुत मनोरम और वातावरण सुहावना हो जाता है। सूर्य के अपने विश्रामालय की ओर प्रस्थान करता देख समस्त जीव जगत चाहे वह जड़ हो या चेतन वह भी अपने घर की ओर प्रस्थान की तैयारी में लग जाता है। पक्षी गण अपने-अपने घोंसले की ओर बढ़ जाते हैं। वनस्पति जगत भी अपने विश्राम की तैयारी में लग जाता है। सायंकाल सूर्यास्त के समय पश्चिमी क्षितिज में लालिमा छा जाती है जो अंधेरा आने की सूचना देता है। दिनभर का पक्षियों का कलरव शांत होने लगता है। आकाश में तारावलियाँ दिखाई देने लगती हैं।

11. शाम के समय सूरज पश्चिम दिशा में होता है। जैसे-जैसे यह अपने विश्राम स्थल अस्ताचल की ओर बढ़ता है, इसकी प्रखरता कम होती जाती है और चमक भी मंद पड़ जाती है मानो दिनभर चलते-चलते थक जाने के कारण इसकी कांति क्षीण हो गई हो। इस समय घरवाले भी सूर्यास्त होने से पूर्व अपने काम निपटाने में लग जाते हैं।

12. विद्यार्थी स्वयं करें।

अध्याय-9

चिड़िया की बच्ची

1. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✓

2. (क) संगमरमर की।
   (ख) माधवदास एक कला-प्रेमी व्यक्ति थे।
   (ग) गुलाब के फूल की डाल पर।
   (घ) अपने नौकर को
   (ङ) माधवदास का मन प्यारी-सी चिड़िया को देख कर प्रसन्न हो गया था।

3. (क) (i) (ख) (ii) (ग) (i) (घ) (iii)

4. (क) सोना एक बहुमूल्य धातु है। सोने को इकट्ठा करने की तृष्णा प्रत्येक व्यक्ति को है। पुरुष समाज संपत्ति में वृद्धि करने के लिए सोना अनेक रूपों में एकत्र करता है। स्त्रियों को सोने के आभूषण से बहुत लगाव है। सबको सोने की भूख है।

(ख) सेठ माधवदास बहुत धनी व्यक्ति हैं। उन्हें विश्वास है कि धन से सब कुछ प्राप्त हो सकता है। वे चिड़िया के रूप, आकार और मधुर स्वर पर बहुत प्रसन्न हैं। वे चाहते हैं कि प्यारी चिड़िया उनके बगीचे में, महल में रहे। इसके लिए वे उसे बहुत लालच देते हैं। उसी प्रयास में वे धन का वर्चस्व बताते हुए कहते हैं- ऐसा वरदान कब किसी को मिलता है।

5. (क) माधवदास बहुत अमीर होते हुए भी बहुत दुखी हैं। उन्हें महसूस होता है कि उनके पास सब कुछ होकर भी कुछ खाली-सा लगता है। उनके जीवन में प्रेम का अभाव है।

(ख) माधवदास को प्रकृति से बहुत प्यार है। उन्हें प्राकृतिक सौंदर्य बहुत सुंदर लगता है। इसके लिए उन्होंने अपनी संगमरमर की कोठी के सामने बगीचे, फव्वारा लगवाया है। वे एक मिलनसार व्यक्ति हैं। उनके यहाँ मित्रों का जमघट लगता है। माधवदास में अपने धन के प्रति अहंकार है। वे धन को सब कुछ मानते हैं।

(ग) माधवदास शाम के समय चबूतरे पर तख्त डलवा कर मसनद के सहारे बैठकर प्राकृतिक दृश्य को तन्मय होकर निहारते हैं। मित्र मंडली के आने पर उनसे चर्चा, विचार-विमर्श करते हैं। नहीं तो पास रखे हुए फर्शी-हुक्के की सटक को मुँह में दिए खयालों में संध्या व्यतीत करते हैं।

(घ) चिड़िया को देखकर माधवदास उसपर मुग्ध हो गए। उसकी मधुर बोली सुनकर वे इस समय अपना सब कुछ भूल गए। उन्होंने चिड़िया से कहा-'आओ, तुम बड़ी अच्छी आई। यह बगीचा तुम लोगों के बिना बहुत सूना लगता है। मैंने यह बगीचा तुम लोगों के लिए ही बनवाया है।

(ङ) माधवदास ने चिड़िया को अनेक प्रकार के लालच दिए। उन्होंने महल की सुंदरता, बाग-बगीचे की सुंदरता को बताते हुए कहा ''यह सब तुम्हारे कलरव, चहचहाहट के बिना सूना है। यहाँ बहुत सोना, हीरे-मोती हैं।'' उन्होंने उसे सोने का घर बनवाने का लालच दिया। उन्होंने सोने की झालर लगाने का प्रलोभन दिया।

(च) चिड़िया ने अपनी माँ के बारे में बताया कि मेरी माँ के घोंसले के बाहर बहुत सुनहरी धूप बिखरी रहती है। मुझे इससे अधिक और क्या चाहिए। माँ दो दाने लाकर मुँह में डाल देती है। जब वह अपने पर खोलने बाहर जाती है तो उसकी माँ बाहर बैठ उसकी प्रतीक्षा करती है।

(छ) कहानी के उस भाग की जिसमें माधवदास कहते हैं कि उनके पास बहुत मोती-सोना है। वे चिड़िया के लिए सोने का घर भी बनवाने को तैयार हो जाते हैं। इस अंश से ज्ञात होता है कि सेठ माधवदास को घमंड हो गया है।

(ज) इस पाठ से हमें यह शिक्षा मिलती है कि धन-दौलत ही सब कुछ नहीं है। धन-दौलत से मनुष्य सब कुछ नहीं प्राप्त कर लेता। धन-दौलत से सुख-सुविधाएं प्राप्त की जा सकती हैं परंतु प्रेम, संतोष नहीं प्राप्त किया जा सकता।

6. (क) कोठियाँ (ख) मोतियाँ (ग) गरमियाँ (घ) डालियाँ

(ङ) चिड़ियाँ (च) गलतियाँ (छ) दासियाँ (ज) बहिनें

7. (क) सेठानी (ख) दासी (ग) भौजाई (घ) बाप

(ङ) नौकरानी (च) बच्चा

8. (क) प्र + कृति (ख) चमक + दार

(ग) चित्र + कार (घ) स्वच्छंद + ता

(ङ) अन + समझ (च) अ + सावधान

(छ) अन + जान

9. (क) जल – इस कुएँ का पानी बहुत मीठा है।

रंग, इज़्ज़त – (i) इस आभूषण पर सोने का पानी चढ़ा हुआ है।

(ii) एक बार समाज में पानी उतर जाने पर फिर वह सम्मान नहीं मिलता।

(ख) एक धातु – यह हार असली सोने का बना है।

निद्रा – अधिक सोना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

(ग) एक रंग - आज रीता लाल रंग के परिधान में बहुत सुंदर लग रही थी।

एक रत्न - लाल (माणिक्य) एक बहुमूल्य रत्न है।

(घ) पंख - पर रहित पक्षी आकाश में उड़ान नहीं भर सकते।

परंतु - मुझे दिल्ली आना था पर न आ सका।

10. भाँति-भाँति देखते-देखते तरह-तरह

कहते-कहते कुछ-कुछ छन-छनकर

काँप-काँप होते-होते प्यारी-प्यारी

11.

	समास-विग्रह	समास-भेद
(क)	भाई और बहन	द्वंद्व समास
(ख)	एक-ब-एक	अव्ययीभाव
(ग)	बिना खटके के	अव्ययीभाव
(घ)	विनोदपूर्ण चर्चा	तत्पुरुष समास
(ङ)	भय से भीत	तत्पुरुष समास

12. यदि हम माधवदास होते तो हम चिड़िया की मधुर बोली की प्रशंसा करते। उसके रूप-गुण की प्रशंसा करते। उसे अपने धन का लालच न देते। चिड़िया को खाने की अच्छी वस्तुएँ लाकर उससे खाने का आग्रह करते। उससे यह भी आग्रह करते कि वह प्रतिदिन हमारे बगीचे में आकर अपनी मधुर बोली सुनाए। उससे यह भी आग्रह करते कि वह अपनी माँ के साथ आकर इसी बगीचे में रहे। उसे अपने मन के खालीपन को बताते। अपना सोने-मोती का अहंकार न दिखाते।

13. यदि शाम को खेलते समय मुझे चोरी-छिपे पकड़ने का प्रयास करे और उसका आभास हमें हो जाय तो हम अपने साथियों के साथ मिलकर उसे पकड़ने का प्रयास करेंगे। अपने किसी साथी को नजदीकी पुलिस पोस्ट पर सूचना देने के लिए भेजेंगे और उस व्यक्ति को पकड़वा देंगे। यदि पुलिस-सहायता सम्भव नहीं है तो हम शोर मचाएंगे।

14. यदि मैं पक्षी होता तो उन्मुक्त गगन में उड़ान भरता। अपनी मधुर बोली से सबको प्रसन्न करता। अपने क्रिया-कलाप और इधर-उधर फुदकने और खेलने की क्रिया द्वारा बालकों को प्रसन्न करता। मैं किसी प्रकार के आडंबर की परवाह न करते हुए स्वतंत्र रूप से उड़ान भरता। मैं किसी भी प्रकार के सांसारिक बंधन को न स्वीकार करता और अपने मन की प्रसन्नता के अनुसार स्वतंत्र जीवन जीता। मैं सदैव स्वतंत्र जीवन जीता। मन को धन-ऐश्वर्य की लालच से दूर रखता। किसी के सुख-दुख में बराबर साथ देता। मैं छोटे-बड़े सबका आदर करता। मैं अपने सद् कार्यों से सबको प्रसन्न रखता।

अध्याय-10

अपूर्व अनुभव

1. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✗ (ङ) ✓

(च) ✗

2. (क) तोत्तो-चान को यासुकी-चान से मिलना था।

(ख) तोत्तो-चान ने अपने पेड़ पर आमंत्रित किया था।

(ग) मैदान के बाहरी हिस्से में था।

(घ) क्योंकि वह पोलियो का शिकार था।

(ङ) छह फुट की ऊँचाई पर।

3. (क) (iv) (ख) (ii) (ग) (ii) (घ) (iii) (ङ) (iii)

(च) (i)

4. (क) तोमोए में प्रत्येक बच्चा बाग के एक-एक पेड़ को अपने स्वयं के चढ़ने का पेड़ मानता था। प्रत्येक पेड़ को वे अपनी निजी संपत्ति मानते थे।

(ख) तोत्तो-चान ने यासुकी-चान को पेड़ पर चढ़ने के लिए पहली योजना के अंतर्गत चौकीदार से एक सीढ़ी घसीटती हुई ले आई। उसे पेड़ के तने के सहारे इस प्रकार खड़ा किया कि सीढ़ी पेड़ की द्वि शाखा तक पहुँच जाए। वह सीढ़ी पर बढ़ गई और उसका ऊपरी किनारा पकड़ लिया और यासुकी-चान को चढ़ने के लिए कहा।

(ग) तोत्तो-चान की पहली योजना सफल नहीं हुई क्योंकि यासुकी-चान के हाथ-पैर इतने कमज़ोर थे कि वह पहली सीढ़ी पर भी नहीं चढ़ पाया था।

(घ) जब तोत्तो-चान और यासुकी-चान पेड़ पर पहुँच गए तो तोत्तो-चान ने यासुकी-चान से सम्मानपूर्वक झुककर कहा-'मेरे पेड़ पर तुम्हारा स्वागत है।' यासुकी-चान मुस्कराया और बोला-'क्या मैं अंदर आ सकता हूँ?'

(ङ) तोत्तो-चान ने रॉकी को सच इसलिए बताया, क्योंकि उसने अपनी माँ से झूठ बोला था जिसका उसे अपराधबोध हुआ। अत: उसने रॉकी से सच बता दिया।

(च) हमें इस पाठ से यह प्रेरणा मिलती है कि दिव्यांग जन की हौसला-अफ़जाई के लिए हर संभव प्रयत्न करना चाहिए जिससे उनके अपूर्ण जीवन में उत्साह का संचार हो, उनमें उन्नतिशील जीवन जीने की उमंग जन्म ले।

(छ) तोत्तो-चान को पहली बार टेलीविज़न के विषय में यासुकी-चान ने बताया क्योंकि उसकी एक बहिन अमेरिका में रहती है। उसके पास टेलीविज़न था। उसने बताया था कि जब टेलीविज़न जापान में आ जाएगा तो घर में बैठे-बैठे ही सोमू-कुश्ती देख सकेंगे।

(ज) तोत्तो-चान ने यासुकी-चान को बहुत परिश्रम करके चढ़ाया। यासुकी-चान पोलियो का शिकार हो जाने के कारण हाथ और पैर से कमज़ोर हो गया था। पहले तो उसे सीढ़ी के सहारे पेड़ पर चढ़ाने का प्रयत्न किया। जब यासुकी-चान चढ़ने में सफल नहीं हुआ तो वह त्रिपाद सीढ़ी द्वारा ऊपर चढ़ाने की कोशिश की किंतु वह तब भी पेड़ पर न चढ़ सका। अंतत: तोत्तो-चान ने उसका हाथ पकड़कर ऊपर खींचकर पेड़ पर तोत्तो-चान को चढ़ाने में सफलता प्राप्त की।

5. (क) मुस्कराना (ख) बहता (ग) करना (घ) पुष्पित
(ङ) पहुँचाना (च) इज़्ज़तदार

6. (क) वर्तमान काल (ख) भूतकाल (ग) वर्तमान काल (घ) भूतकाल

7. (क) पाताल (ख) उतरना (ग) पहला (घ) हतोत्साह
(ङ) शक्तिशाली/ताकतवर (च) अपमान (छ) नीचे (ज) अशिष्टता

8. (क) पुंल्लिग (ख) पुंल्लिग (ग) स्त्रीलिंग (घ) पुंल्लिग
(ङ) स्त्रीलिंग (च) स्त्रीलिंग (छ) पुंल्लिग (ज) स्त्रीलिंग
(झ) पुंल्लिग (ञ) पुंल्लिग

9. (क) अनुभवी (ख) वही (ग) उत्साहित (घ) यही
(ङ) ज़मीनी (च) पिछड़ा (छ) दैनिक (ज) हमवार

10. यासुकी-चान को पेड़ पर चढ़ाने के तोत्तो-चान ने जो प्रयास किए वही सब मैं भी करता। तोत्तो-चान ने अपनी बाल-बुद्धि के अनुसार यासुकी-चान के ऊपर चढ़ने के लिए सीढ़ी का प्रबंध किया, उसे नीचे धक्का देकर ऊपर चढ़ाने का प्रयत्न किया। सफल न होने पर वह त्रिपाई सीढ़ी ले आई। जिससे वह किसी तरफ़ उलटे या गिरे नहीं। तब भी वह ऊपर न चढ़ सका जबकि तोत्तो-चान उसका एक-एक पाँव सीढ़ी पर रख रही थी और अपने सिर से ऊपर चढ़ने के लिए थामे थे। बहुत परिश्रम के बाद यासुकी-चान ऊपर चढ़ने में सफल हुआ। एक बालक के लिए इससे ज़्यादा प्रयास करना संभव नहीं है।

11. लेखिका ने यासुकी-चान के बारे में पेड़ पर चढ़ने का यह पहला और आखिरी मौका था-इसलिए लिखा कि इसके बाद इतने परिश्रम और उत्साह से पेड़ पर चढ़ाने के लिए कौन प्रयास कर सकता था। दूसरी बात यह थी कि टेलीविज़न का प्रचलन प्रारंभ हो गया था। घर पर टेलीविज़न आ जाने पर वह एक जगह बैठे-बैठे सब कुछ देख सकता था।

12. विद्यार्थी स्वयं ढूँढ़े और करें।

अध्याय-11

रहीम के दोहे

1. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✓

2. (क) क्वार मास के गरजने वाले बादलों से।

   (ख) क्वार मास के थोथे बादलों से।

   (ग) क्वार के महीने के बादलों को।

   (घ) विपत्ति के समय सच्चे मित्र साथ नहीं छोड़ते।

   (ङ) जब पानी में जाल डालने पर मछली जाल में फँस जाती है तो पानी मछली का साथ छोड़ देता है।

3. (क) (iv) (ख) (i) (ग) (iii) (घ) (iii) (ङ) (i)

4. (क) जाल में फँसी मछली का मोह न करते हुए जाल पानी को बह जाने देता है। इसके बावजूद मछली पानी के मोह को नहीं त्याग पाती। जाल में फँसी मछली का साथ पानी छोड़ देता है किंतु मछली पानी का मोह नहीं छोड़ पाती।

   (ख) कवि रहीम-जीवन के कटु सत्य को उपर्युक्त दोहे द्वारा बताते हुए कहते हैं कि धनी व्यक्ति निर्धन हो जाने पर क्वार के बादल के समान हो जाता है। जैसे क्वार महीने के बादलों में बरसने की क्षमता नहीं होती, केवल गरजते भर हैं, उसी तरह धनी व्यक्ति निर्धन होने पर अपनी पिछली बातों की डींग मारता है।

5. (क) सच्चे मित्र की प्रमुख विशेषता होती है कि वह विपत्ति के समय भी मित्र का साथ नहीं छोड़ता। वह जानता है कि मित्रता अनेक यत्न करने से बनती है।

   (ख) रहीम कवि कहते हैं कि सरोवर में भरा जल दूसरों के ही प्रयोग में आता है। वह स्वयं नहीं पीता। वृक्ष पर लगे फल का प्रयोग दूसरे लोग ही करते हैं। वृक्ष स्वयं उस फल को नहीं खाता। उसी प्रकार सज्जन पुरुष धन का संग्रह कल्याण के लिए करता है।

   (ग) कवि रहीम कहते हैं कि पृथ्वी जिस प्रकार धूप, शीत और वर्षा को सहन कर लेने पर भी यथावत बनी रहती है, उसी प्रकार मनुष्य के शरीर भी जब जैसा पड़ता है, सहन कर लेती है। धरती हमें सहन करने की सीख देती है।

   (घ) सज्जन लोग परमार्थ के लिए, दूसरों का कल्याण करने के लिए संपत्ति अर्जित करते हैं और उसका संग्रह करते हैं।

   (ङ) रहीम के दोहे हमें जीवन की सच्चाई का परिचय कराते हुए उस सच्चाई को जीवन में उतारने की प्रेरणा देते हैं साथ ही जीवन जीने का साहस प्रदान करते हैं।

6. (क) नीर — पानी

   (ख) वृक्ष — विटप

   (ग) सरोवर — तालाब

   (घ) पृथ्वी — धरा

   (ङ) शरीर — काया

7. (क) संपत्ति (ख) मित्र (ग) विपत्ति (घ) मछली (ङ) सत्य

   (च) बादल (छ) सहन (ज) नहीं (झ) पिछली (ञ) छोड़ती

8. (क) मीत (ख) देह (ग) सुजान (घ) छोह (ङ) बात

   (च) लगे (छ) विपति (ज) रहिमन

9. जाल पर जल जात बहि – 'ज' की आवृत्ति बार-बार

   बनत बहुत बहुत रीत – 'ब' की आवृत्ति बार-बार

11. रहीम के दोहे वर्तमान में भी प्रासंगिक हैं और सदैव प्रासंगिक रहेंगे। सत्य का कोई समय काल नहीं होता। सत्य शाश्वत होता है। रहीम के दोहे जीवन के कटु एवं सत्य आधारित अनुभव के परिणाम हैं। इसलिए इसकी प्रासंगिकता पहले भी थी, आज भी है, और आगे भी बनी रहेगी। रीति-रिवाज़, परंपराएँ, आडंबर, रूढ़ियाँ बदलती हैं समय के अनुसार क्योंकि वे सत्य आधारित नहीं होतीं।

अध्याय-12

कंचा

1. (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✗

2. (क) आँवले के आकार के।

   (ख) जार्ज को बुखार था, इसलिए वह स्कूल नहीं आया।

   (ग) फीस के पैसे से कंचे खरीदे।

   (घ) 'क्या सभी बच्चे फीस जमा कर चुके?' मास्टर जी ने कक्षा छोड़ने से पहले पूछा।

   (ङ) चॉक का टुकड़ा अप्पू के चेहरे पर गिरा।

   (च) पाठ के लेखक- टी. पद्मनाभन

3. (क) (iii) (ख) (iv) (ग) (ii) (घ) (i) (ङ) (iii)

   (च) (i)

4. (क) अप्पू ने जब दुकान में कंचे देखे तो वह सोचने लगा-यह कंचे का जार नया-नया रखा गया है। उससे पहले उसने यह चीज़ नहीं देखी थी। वह जार देखते-देखते कल्पना लोक में विचरने लगा। उसे जार बड़ा होता नज़र आ रहा था। एकाएक दुकानदार ने टोका-लड़के तू उस जार को नीचे गिरा देगा। वह कल्पना से जागा।

   (ख) अप्पू के अनुसार बच्चों के बीच जार्ज कंचे का एक दक्ष खिलाड़ी था। कितना भी बड़ा लड़का उसके साथ कंचे खेले, जॉर्ज से हार जाएगा। जॉर्ज से हारने के बाद वह लड़का यों ही नहीं जा सकता। उसे अपनी बंद मुट्ठी ज़मीन पर रखनी होती है तब जॉर्ज कंचा चला कर बंद मुट्ठी के जोड़ों की हड्डी तोड़ता है तब कहीं जाने देता है।

   (ग) जब कक्षा में मास्टर पढ़ा रहे थे तब अप्पू दुकान में रखे कंचे के बारे में सोच रहा था। लोहे का एक बड़ा शीशे वाला जार। उसमें हरी लकीर वाले सफ़ेद गोल कंचे, बड़े आँवले जैसे। जब जॉर्ज ठीक होकर आएगा तब उससे कहेगा, उस समय जॉर्ज कितना प्रसन्न होगा। यही अप्पू सोच रहा था।

   (घ) अप्पू कंचे खरीदने की बात जॉर्ज के अतिरिक्त और किसी को नहीं बताना चाहता था क्योंकि वह कंचे बहुत सुंदर थे और वह उस कंचे से केवल जॉर्ज के साथ ही खेलना चाहता था।

   (ङ) अप्पू के मन में शंका उठी कि क्या सभी कंचों में लकीर होगी? यही देखने के लिए उसने पोटली खोलने का निश्चय किया। बस्ता नीचे रखकर वह पोटली खोलने लगा। पोटली खुली और सारे कंचे बिखर गए और वह सड़क के बीचों-बीच पहुँच गए।

5.

स्त्रीलिंग	**पुल्लिंग**	**स्त्रीलिंग**	**पुल्लिंग**
चिड़चिड़ाहट	ध्यान	आवाज़	स्पर्श
चिंगारी	दरवाज़ा	चिकोटी	चेहरा
चाय	चेहरा	घबराहट	कंचा

6.

	शब्द	**शब्द**
(क)	खुशबूदार	दुकानदार
(ख)	मुस्कराकर	घबराकर
(ग)	पढ़नेवाला	लिखनेवाला
(घ)	मरता	बहता
(ङ)	बेलना	खेलना

7. (क) चम्पत हो जाना, भाग जाना– रमेश मोहन के बस्ते से विज्ञान की किताब निकालकर नौ-दो ग्यारह हो गया।

   (ख) हार जाना– भारत की कूटनीति के समक्ष आखिर पाकिस्तान मात खा ही गया।

   (ग) बहुत क्रुद्ध होना– अपने पिता जी को रजनीश द्वारा अपमानित किया जाना देख रोहित की आँखों में चिनगारियाँ सुलगने लगीं।

   (घ) आश्चर्य करना– मोहन की अप्रत्याशित प्रतिभा को देख अन्य विद्यार्थियों ने दाँतों तले उँगली दबा ली।

8. चलते-चलते टुकर-टुकर

नया-नया देखते-देखते

अपनी-अपनी खड़े-खड़े

देख-देख जाते-जाते

एक-एक खड़े-खड़े

कैसे-कैसे

9. अप्पू को घर से पैसे मिले थे फीस देने के लिए। उसने स्कूल में फीस न जमा करके कंचे खरीद लिए। उसका इस प्रकार कंचे खरीदने का तरीका एकदम गलत है।

10. हमने नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म न.1 पर 'स्थिति बुक स्टाल' पर एक पुस्तक पर नज़र पड़ी। पुस्तक का नाम था- महात्मा गांधी-मेरे पितामह। मैं जिज्ञासावश उस पुस्तक को देखने लगा। उसमें गांधी जी के विषय में पूरा परिचय था। मैंने वह पुस्तक खरीदनी चाही परंतु मूल्य देखकर सकपका गया। मेरे पास पैसे कम थे। अंततः हमने बिना टिकट जाने की सोच, वह पुस्तक खरीद ली।

11. यदि अप्पू के पिता को यह पता चलता कि उनके बेटे ने फीस के पैसे स्कूल में न जमाकर कंचे खरीद लिए तो बहुत दुखी और गुस्सा भी होते। वे अप्पू को पहले तो डाँटते, फिर उसे प्यार से समझाते कि उसने जो गलती की है, उसे फिर कभी न दोहराए।

12. गली-मुहल्ले में खेले जाने वाले खेल हैं- कंचे का खेल, गुल्ली-डंडे का खेल, कबड्डी का खेल। आँख में पट्टी बांधकर दूसरे खिलाड़ी को छूने वाला खेल।
हम कबड्डी का खेल खेलते हैं।

अध्याय-13

एक तिनका

1. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✗ (ङ) ✓

2. (क) 'एक तिनका' कविता के रचयिता - अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध।

(ख) घर की मुँडेर पर।

(ग) कवि घमंडी था।

(घ) तिनका घमंड में ऐठे हुए कवि की आँखों में पड़ा।

(ङ) आँख में एक तिनका गिर जाने से परेशान हो जाने से कवि की ऐंठ भाग गई।

3. (क) (iii) (ख) (i) (ग) (iii) (घ) (ii) (ङ) (iii)

(च) (i)

4. कवि कह रहा है कि वह एक दिन अपनी शक्ति, सामर्थ्य के घमंड में चूर घर की मुँडेर पर खड़ा था कि दूर से उड़कर आया हुआ एक छोटा-सा तिनका उसकी आँखों में पड़ गया। वह तिनके के पड़ जाने से परेशान हो उठा। कविता का आशय है कि मनुष्य को अपने बल, धन पर घमंड नहीं करना चाहिए क्योंकि उसपर एक तिनका भी भारी पड़ सकता है।

5. मैं झिझक **उठा, हुआ बेचैन-सा**

लाल होकर आँख भी दुखने लगी।

मूठ देने लोग कपड़े की लगे

ऐंठ बेचारी दबे पाँवों भगी।

6. (क) कवि की आँख में एक छोटा-सा तिनका पड़ जाने से उसकी हालत खराब हो गई। वह बेचैन-सा हो उठा। उसकी आखें लाल होकर दुखने लगी। एक छोटे से तिनके की शक्ति देख उसके शक्तिवान होने का घमंड चूर-चूर हो गया।

(ख) तिनका आँख में पड़ जाने से कवि परेशान हो उठा। आँखों में पीड़ा होने लगी। तब उसकी समझ जागी। वह सोचने लगा-मनुष्य अपने धन-बल पर व्यर्थ इतना ऐंठता-इतराता है। तुम्हारे लिए तो एक छोटा-सा तिनका ही बहुत है।

(ग) आँख में तिनका पड़ जाने से कवि परेशान हो उठा। उसे बहुत बेचैनी होने लगी। उसकी आँख लाल होकर दुखने लगी। उसकी बेचैनी देख लोग कपड़े की मूंठ देने लगे। अंत में किसी उपाय से आँख से तिनका निकल सका।

(घ) इस कविता से सीख मिलती है कि कभी किसी बात पर घमंड नहीं करना चाहिए। कभी-कभी हाथी जैसे विशाल जानवर के लिए चींटी प्राणघातक बन जाती है। जैसे कवि की आँख में एक तिनका पड़ जाने से कवि परेशान हो उठा।

(ङ) 'एक तिनका' कविता का सारांश है- मनुष्य को कभी घमंड नहीं करना चाहिए। कभी भी अपने को सर्वशक्तिमान नहीं समझना चाहिए। कभी-कभी छोटी वस्तु इतना परेशान कर देती है कि उसके सामने सभी शक्तियाँ विफल हो जाती हैं।

7. (क) अहंकार — दर्प

(ख) नेत्र — चक्षु

(ग) व्याकुल — व्यग्र

(घ) पैर — पग

8. (क) शहर में **अचानक** बाढ़ का पानी प्रवेश करने से अफरा-तफरी मच गई।

(ख) जब से रवि को भाई के अस्वस्थ होने का समाचार मिला है, वह **बेचैन-सा** इधर-उधर टहल रहा है।

(ग) आँख में पड़ा छोटा-सा तिनका, कवि के **घमंड** को चूर-चूर कर गया।

(घ) एक बहुत ताकतवर के लिए एक **तिनका** भी भारी पड़ सकता है।

(ङ) आँख में तिनका पड़ने पर कपड़े की **मूँठ** देना चाहिए।

9. (क) पुल्लिग (ख) पुल्लिग (ग) स्त्रीलिंग (घ) पुल्लिग

(ङ) पुल्लिंग (च) स्त्रीलिंग

10. (क) (iii) (ख) (i) (ग) (iv) (घ) (ii)

11. किसी के मन में घमंड उत्पन्न होने के मुख्य कारण हैं-धन, यश, बल और ज्ञान। इन्हीं चार वस्तुओं से मनुष्य के मन में घमंड उत्पन्न होता है। कवि को अपने यश, धन का घमंड उत्पन्न हुआ होगा या अपने बल का घमंड आया होगा। कवि को अपने साहित्य की जानकारी और प्रतिष्ठा का घमंड था। इसी के घमंड में ऐंठा हुआ वह अपने घर की मुँडेर पर खड़ा था कि एक छोटा-सा तिनका उड़कर उसकी आँख में पड़ गया। वह एक छोटे से तिनके के पड़ जाने से बेचैन हो उठा और उसे समझ आई कि एक छोटे-से तिनके में इतनी शक्ति है कि उसे बेचैन कर दिया। यह सोच उसका अहंकार उसके मन से भाग गया।

12. व्यक्ति को कभी भी किसी बात का घमंड नहीं करना चाहिए। यदि हम धर्म की दृष्टि से देखें तो- भगवान ने भी कहा है-घमंड ही उनका भोजन है। वे अपने भक्तों का घमंडी होना कदापि नहीं सहन कर सकते। भौतिक जीवन में भी घमंड करना अपमानजनक है। प्रत्येक सेर को सवा सेर मिल ही जाते हैं। इसलिए कभी घमंड नहीं करना चाहिए। एक तिनके में इतनी शक्ति है कि संसार के सर्वशक्तिवान प्राणी मनुष्य को भी बेचैन कर देने में सक्षम है। अतः स्वयं को ही शक्तिमान नहीं समझना चाहिए।

13. ऐंठ - मैं शक्तिशाली हूँ। मैं जो चाहे कर सकता हूँ। (समझ ऐंठ की बातें दरवाज़े के पीछे से सुनती है)

(प्रकट होकर)

समझ - ऐंठ भाई, अपनी शक्ति पर इतराओ मत। (ऐंठ चौंक उठता है समझ के आ जाने से) (समझ कहती है) यह शक्ति केवल तुममें ही नहीं है और लोगों में भी है। तुमसे भी शक्तिशाली लोग हैं इस दुनिया में।

(ऐंठ को समझ की बातें बुरी लगती है पर वह कुछ बोलता नहीं)

ऐंठ - बहिन, तुम मुझसे बड़ी हो, इसका यह मतलब नहीं कि तुम हरदम हमारे विपरीत बोलो।

समझ - भाई, तुम मुझसे छोटे हो इसीलिए तुम्हें सीख देती हूँ।

(एकाएक ऐंठ की आँख में तिनका जा पड़ता है। वह दर्द से बिलबिला उठता है)

ऐंठ - बहिन, आँख में बहुत जलन हो रही है।

(समझ उसकी आँख से तिनका निकालती है और ऐंठ को दिखाती है)

समझ - देखो! एक-छोटे से तिनके से हारकर दर्द से बिलबिला उठे।

(ऐंठ को समझ की बातें सत्य लगती हैं)

अध्याय-14
खानपान की बदलती तसवीर

1. (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✗

2. (क) पिछले दस-पंद्रह वर्षों में।

(ख) उत्तर भारत की ढाबा संस्कृति लगभग पूरे देश में फैल चुकी है।

(ग) ढोकला-गाठिया गुजरात के व्यंजन हैं।

(घ) पाव-भाजी (बंबई) मुंबई शहर के स्थानीय व्यंजन हैं।

(ङ) आलू-चिप्स के कई विज्ञापित रूप तेज़ी से घर-घर में अपनी जगह बनाते जा रहे हैं।

(च) खान-पान की बदली संस्कृति से युवा पीढ़ी सबसे अधिक प्रभावित हुई है।

3. (क) (iii) (ख) (i) (ग) (ii) (घ) (iv) (ङ) (iv)

4. (क) खान-पान भी एक-दूसरे से परिचित कराने का बहुत सशक्त माध्यम है। संचार माध्यमों के विकास के चलते इस दृष्टिकोण से खान-पान की नई संस्कृति में हमें राष्ट्रीय एकता स्थापित करने में भी सहयोग मिल सकता है। यह सहयोग तभी संभव है जब हम खान-पान से जुड़ी हुई दूसरी चीज़ों की ओर भी ध्यान देंगे।

(ख) आज उत्तर भारत में प्रचलित व्यंजनों की दुर्गति हो रही है। इसका कारण है स्थानीय व्यंजनों की उपेक्षा। आज स्थानीय व्यंजन एथनिक कहकर पुकारे जाने लगे हैं। अब ये स्थानीय व्यंजन केवल पाँच सितारा होटलों तक ही सीमित रह गई है परंतु घरों-बाज़ारों से यह स्थानीय व्यंजन गायब हो जाएँ तो यह दुर्भाग्य ही होगा। आज अच्छी तरह बनाई-पकाई गई पकौड़ियाँ, कचौड़ियाँ-जलेबियाँ भी अब बाज़ारों से गायब हो रही हैं। मौसमी सब्ज़ियों से भरे हुए समोसे अब नहीं मिलते।

5. (क) खान-पान की मिश्रित संस्कृति के सकारात्मक पहलू के अंतर्गत गृहणियों और कामकाजी महिलाओं को अब जल्दी तैयार हो जाने वाले विविध व्यंजनों की विधियाँ उपलब्ध हैं। नई पीढ़ी को देश-विदेश के व्यंजनों को जानने का संयोग मिला है।

(ख) आज स्थानीय व्यंजनों के प्रचलन को पुनर्जीवित करना है। इसे केवल पाँच सितारा होटलों के प्रचार के लिए नहीं छोड़ना है। स्थानीय व्यंजनों का घरों और बाज़ारों से गायब हो जाना एक दुर्भाग्य ही होगा। अब तो अच्छी तरह बनाई और पकाई गई पूड़ियाँ-कचौड़ियाँ-जलेबियाँ घर की कौन कहे, बाज़ार से भी गायब होती जा रही हैं।

(ग) आज़ादी के बाद उद्योग-धंधों, नौकरियों-स्थानांतरणों का जो एक नया विस्तार हुआ है, उसके कारण भी खान-पान की चीज़ें एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में पहुँची हैं। शहरों में मध्यमवर्गीय स्कूलों में जब दोपहर के टिफ़िन के समय बच्चों के टिफ़िन खुलते हैं तो उनसे विभिन्न प्रदेशों के व्यंजनों की सुंगध महसूस की जा सकती है।

(घ) स्थानीय व्यंजनों की वर्तमान में स्थिति कम से कमतर होती जा रही है। अब स्थानीय व्यंजनों के विषय नई पीढ़ी बहुत कम जानती है। अब नए आधुनिक व्यंजनों का प्रचलन बढ़ा है। स्थानीय व्यंजन घटकर कुछ ही चीज़ों तक सीमित हो गए हैं। अब स्थानीय व्यंजनों का पुनरुद्धार करने की आवश्यकता है।

(ङ) खान-पान की मिश्रित संस्कृति के नकारात्मक पक्ष हैं- व्यंजनों का असली और अलग-अलग स्वाद न ले पाना। इस संस्कृति के अंतर्गत बने व्यंजनों का प्रीतिभोज और पार्टियों में एक साथ ढेरों चीज़ें रख दी जाती हैं और उनका स्वाद गड्ड-मड्ड हो जाता है।

(च) अब गृहिणियों और कामकाजी महिलाओं के लिए इस भागम-भाग की ज़िंदगी में खरबूज़े के बीज सुखाना-छीलना और फिर उससे व्यंजन तैयार करना दुःसाध्य हो गया है क्योंकि उनके पास यह सब करने का समय नहीं है।

6. (क) दर्शनीय (ख) विभागीय (ग) वर्गीय (घ) भारतीय (ङ) राष्ट्रीय

(च) प्रांतीय (छ) स्थानीय (ज) जातीय

7. (क) अच्छे और पौष्टिक **खानपान** से ही अच्छा स्वास्थ्य संभव है।

(ख) आजकल **देसी-विदेशी** व्यंजनों के विषय में नई पीढ़ी को जानने का सुयोग मिला है।

(ग) आज **लाखों-करोड़ों** लोग देश में बेरोज़गार हैं।

(घ) आज खान-पान की मिश्रित संस्कृति का प्रचलन **गली-मुहल्लों** तक पहुँच गया है।

(ङ) आज की **नई** युवा पीढ़ी भावुकता को **नज़रअंदाज़** कर अपने नफ़ा-नुकसान को ज़्यादा महत्त्व देती है।

(च) आज खान-पान की संस्कृति में **गाँव-शहर** प्रत्येक जगह बदलाव नज़र आता है।

8. खरबूज़ा ज़्यादा

चीज़ बाज़ार

ज़रूर सब्ज़ियाँ

फ़र्क ज़रूरी

आज़ादी टिफ़िन

9. (क) प्रतिकूल (ख) अविकसित, विनाश प्राप्त (ग) प्राचीन (घ) असुविधा

(ङ) क्षेत्रीय, स्थानीय (च) सस्ता (छ) सौभाग्य (ज) ग्रामीण

(झ) सरल (ञ) अपरिचित

10. (क) महिलाएँ (ख) जलेबी (ग) पुस्तिकाएँ (घ) नौकरियाँ (ङ) प्रक्रियाएँ

(च) बच्चे (छ) पूड़ियाँ (ज) कचौड़ियाँ (झ) सब्ज़ी

(ञ) विधि

11. सहपाठी-एक – आज के बदलते परिवेश ने खान-पान की भी संस्कृति को बदल दिया है।

सहपाठी-दो – यह तो होता ही है। जब आदमी एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाता है तो वह दूसरे स्थान की संस्कृति ग्रहण करता है और अपनी संस्कृति की छाप छोड़ता है। बदलाव का यही कारण है।

सहपाठी-एक – बात तो बिलकुल सही है परंतु आज घर और बाज़ार से जो स्थानीय और पारंपरिक व्यंजनों का प्रचलन समाप्त होता जा रहा है, वह चिंता का विषय है।

सहपाठी-दो – भाई! यह बात हमें भी खलती है लेकिन किया क्या जाए। आज पारंपरिक व्यंजन बनाने का समय किसके पास है। सब लोग जल्दी में हैं। इसीलिए हम अपनी मूल पहचान से दूर होते जा रहे हैं।

12. मनुष्य की यह प्रकृति होती है कि जब वह किसी शहर या कस्बे में पहली बार जाता है तो वहाँ की बहुचर्चित और खास व्यंजन जो उस शहर की पहचान के रूप में जाने जाते हैं, उसका स्वाद अवश्य लेना चाहता है। उदाहरण के लिए, मुंबई की पाव-भाजी, दिल्ली के छोले कुलचे, मथुरा के प्रसिद्ध पेड़े, आगरा के पेठे और नमकीन। उपर्युक्त वस्तुएँ उनसे जुड़े स्थानों की पहचान हैं। कोई भी जब उन स्थानों पर जाता है तो इन पदार्थों का स्वाद अवश्य लेना चाहता है।

अध्याय-15

नीलकंठ

1. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✗

(च) ✓

2. (क) एक अतिथि को। (ख) बड़े मियाँ को चिड़िया वाले की दुकान की ओर

(ग) बड़े मियाँ के भाषण की तूफ़ान मेल गाड़ी के लिए।

(घ) नीलाभ ग्रीवा के कारण।

(ङ) कुब्जा नीलकंठ के साथ राधा को देखते ही राधा को मारने दौड़ती थी।

(ङ) विदेशी महिलाओं ने नीलकंठ को परफ़ैक्ट जेंटिलमैन की उपाधि दी।

3. (क) (ii) (ख) (ii) (ग) (iii) (घ) (iv) (ङ) (ii)

(च) (iii) (छ) (i) (ज) (iv)

4. (क) बड़े मियाँ चिड़िया वाले ने लेखिका को बताया कि शंकरगढ़ का कोई चिड़ीमार एक मोर और एक मोरनी के बच्चे को पकड़कर लाया है। बड़े मियाँ को उन बच्चों के मूल्य तीस रुपए चिड़ीमार को देने पड़े हैं। लेखिका ने उन्हीं दोनों बच्चों के मूल्य के रूप में पैंतीस रुपए बड़े मियाँ को दिए।

(ख) लेखिका ने बड़े मियाँ को दोनों पक्षी शावकों के मूल्य देकर वह तार का संकीर्ण पिंजरा जिसमें वे दोनों पक्षी भी बंद थे, कार में रखे तब उनमें हलचल हुई और यह लगा कि वे जीवित हैं। दोनों पक्षी शावकों के पिंजरे के अंदर छटपटाने से लगता था मानो वह पिंजरा ही सजीव हो गया है और उड़ने को छटपटा रहा है।

5. (क) बड़े मियाँ ने उन दोनों मोर के पक्षियों के विषय में बताया कि शंकरगढ़ से एक चिड़ीमार मोर के दो बच्चे पकड़ लाया है। एक बार आपने मोर के बच्चे के विषय में पूछा था। इसलिए हमने इन पक्षियों को उससे ले लिया। एक आदमी इन्हें खरीदने आया था क्योंकि मोर के पंखों से दवा बनती है। मैंने उसे देने से इनकार कर दिया, आप का बहाना बनाकर।

(ख) दोनों नए लाए गए मोर के बच्चों को जाली के बड़े घर में पहुँचाया गया तब वहाँ रहने वाले अन्य जीव-जंतुओं ने वैसा ही कुतुहल जमाया जैसा घर में नई वधू के आने पर परिवार में स्वाभाविक रूप से होता है। लक्का कबूतर अपना नृत्य छोड़ उन पक्षियों के चारों ओर परिक्रमा कर गुटुर-गूँ की रागिनी गाने लगा। बड़ा खरगोश सभ्य सभासद के सदृश क्रम में बैठकर उनका गंभीरतापूर्वक निरीक्षण करने लगे। तोते भी उनका निरीक्षण करने लगे। उस दिन लगता था उनके चिड़ियाघर में भूचाल आ गया था।

(ग) नीलकंठ (मोर) ने स्वयं को लेखिका के चिड़ियाघर के निवासी जीव-जंतुओं का सेनापति और उनका संरक्षक बन गया। वह प्रतिदिन सवेरे सभी खरगोश, कबूतर आदि को एकत्रकर वहाँ ले जाता जहाँ दाना दिया जाता था और घूम-घूमकर सबकी रखवाली करता। किसी ने कोई गलती की और उसे अपने चंचु प्रहार से दंड देने दौड़ पड़ता।

(घ) लेखिका के घर आने पर धीरे-धीरे मोर का विकास चमत्कारी रूप में हुआ। मोर के सिर की कलँगी और सघन, ऊँची तथा चमकीली हो गई। उसकी चोंच अधिक बंकिम और पैनी हो गई। उसकी नील-हरित ग्रीवा बहुत आकर्षक हो गई। दाहिने और बाएँ पंखों में स्लेटी और सफ़ेद आलेखन स्पष्ट दिखाई देने लगे। पूँछ लंबी हो गई और उसके पंखों पर चंद्रिकाओं के इंद्र धनुषी रंग उद्‌दीप्त हो उठे। उसके गति में भी परिवर्तन आया।

(ङ) एक दिन एक साँप जालीघर में पहुँच गया। जालीघर में रहने वाले सभी जीव-जंतु तो अपनी प्राण रक्षा में इधर-उधर भाग निकले परंतु एक नन्हा खरगोश साँप की पकड़ में आ गया और उसे निगलने लगा। साँप ने खरगोश का आधा शरीर मुँह में दबा रखा था। खरगोश शावक चीं-चीं कर रहा था पर आवाज़ बहुत धीमी थी। नीलकंठ ने वह चीं-चीं सुन ली। वह नीचे आया और साँप को अपने चोंच के प्रहार से मार दिया। खरगोश के बच्चे को बचा लिया।

(च) नीलकंठ की प्रसन्नता का अंत एक मोरनी जिसका नाम लेखिका ने कुब्जा रखा था, के आने के बाद हुआ। कुब्जा नाम के अनुकूल व्यवहार करने वाली थी। उसने नीलकंठ की सहचरी राधा को अपने चंचु-प्रहार से दूर कर दिया। कुब्जा राधा को नीलकंठ के पास भी नहीं फटकने देती। ऐसा सौतिया डाह का चित्रण मनुष्य जाति में भी नहीं देखने को मिलेगा जैसा कुब्जा का राधा के साथ था। यहीं से नीलकंठ की प्रसन्नता गायब हो गई।

(छ) नीलकंठ और राधा अपनी सबसे प्रिय ऋतु वर्षा ऋतु के आने पर मेघों के आने की आहट पा लेते थे तब उनकी मंद बूँदों की लड़ियों की प्रतीक्षा करती। मेघों के गर्जन के ताल पर ही उसके तन्मय नृत्य का आरंभ होता और फिर मेघ जितना अधिक गरजता, बिजली जितनी अधिक चमकती, बूँदों की रिमझिमाहट जितनी तीव्र होती जाती, नीलकंठ का नृत्य उतना ही अधिक बढ़ता जाता।

(ज) एक दिन लेखिका पैरों से घायल एक और मोरनी बाज़ार से उठा लाईं। उसकी सेवा और उपयुक्त चिकित्सा की। यद्‌यपि उसके पैर ठीक हो गए पर टेढ़े हो गए। लेखिका ने उसका नाम कुब्जा रखा। कुब्जा का आना नीलकंठ और राधा मोरनी के जीवन में भूचाल आना था जो नीलकंठ का प्राण लेकर ही खतम हुआ। कुब्जा नाम के अनुरूप स्वभाव में भी कुब्जा ही प्रमाणित हुई। कुब्जा नीलकंठ के साथ राधा को देखते ही राधा को मारने दौड़ती। उसने इस प्रकार नीलकंठ के जीवन में अशांति उत्पन्न कर दी।

6. (क) जीवित (ख) विस्मित

(ग) सीमित (घ) प्रसारित

(ङ) प्रमाणित (च) क्रोधित

(छ) आधारित (ज) फलित

7. (क) और (ख) कि (ग) परंतु (घ) और (ङ) परंतु

8. (क) परि + नाम (ख) नव + आगंतुक

(ग) सम् + मान (घ) आनंद + उत्सव

(ङ) दुः + बल (च) मेघ + आच्छन्न

9. वर्षा-ऋतु मोरों की सबसे प्रिय ऋतु है। उन्हें वर्षा ऋतु के आगमन का ज्ञान हवाओं की नमी और गति से हो जाता है। तभी वे अपनी मधुर के-का ध्वनि से बूँदों के पड़ने की प्रार्थना मेघों से करना शुरू कर देते हैं। मेघ के गर्जन के ताल पर ही उनके तन्मय नृत्य की शुरूआत होती है और फिर मेघ जितना अधिक गरजता है, बिजली जितनी अधिक चमकती है और बूँदों की रिमझिमाहट जितनी

तीव्र होती है मोर का नृत्य की उतनी ही गति से बढ़ता जाता है और उनका के-का स्वर उतना ही मंद्र से मंद्रतर होता जाता है। जब मोर नृत्य करते हैं उस समय का दृश्य बहुत ही मनमोहक और नेत्रप्रिय होता है। यदि उस समय मोर किसी पुष्प वाटिका में नृत्यरत हो तो उस समय की सुंदरता अवर्णनीय-अकल्पनीय होती है।

10 मोर के अतिरिक्त कलँगी वाले पक्षी हैं—मुर्गा, कठफोड़वा पक्षी, हार्नबिल आदि।

अध्याय-16

भोर और बरखा

1. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✗

2. (क) इस पद में भोर के समय की बात की गई है।
   (ख) मीरा की भक्ति और प्रेम श्रीकृष्ण के प्रति है।
   (ग) कृष्ण को माता यशोदा जगा रही हैं।
   (घ) घर-घर के दरवाज़े खुल गए हैं।
   (ङ) गोपियाँ दही मथ रही हैं।
   (च) 'भोर और बरखा' कविता की रचनाकार हैं-मीराबाई।

3. (क) (i) (ख) (ii) (ग) (iii) (घ) (iv) (ङ) (ii)

4. (क) माँ यशोदा श्रीकृष्ण को जगाते हुए कह रही हैं- बेटा उठो, अब सवेरा हो गया है। गायों की रखवाली करने वाले ग्वाल-बाल हाथ में माखन-रोटी लिए तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं। कवयित्री मीरा बाई कहती हैं हे प्रभु गिरधर नागर, अपनी शरण में आए हुए भक्तों का उद्धार करने के लिए अब जाग जाओ।
   (ख) मीराबाई को उनके प्रभु श्रीकृष्ण के आगमन की अनुभूति हो रही है। प्रकृति भी इस तरफ़ संकेत कर रही है। सावन मास में बादलों से रिमझिम बूँदें पड़ रही हैं, शीतल मंद हवाएँ चल रही हैं। यह अवसर मंगल गीत गाकर आनंदित होने का है क्योंकि मीरा के आराध्य श्रीकृष्ण के आगमन के संकेत मिलने लगे हैं।

5. (क) प्रस्तुत पद में माता यशोदा श्रीकृष्ण को जगाते हुए कहती हैं—बंसी वाले लला अब उठो। भोर हो गई है। घर-घर के दरवाज़े खुल गए हैं। गोपियों के दही मथने की सूचना उनके हाथ के कंगन बजने से मिल रही है। दरवाज़े पर सुर-नर-मुनि तुम्हारे दर्शन के लिए खड़े हैं। ग्वाल-बाल तुम्हें ले जाने के लिए द्वार पर शोर मचा रहे हैं। गाय चराने वाले हाथ में माखन-रोटी लिए तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं, उठो।
   (ख) सुबह होने पर ग्वाल-बाल सब कोलाहल कर रहे हैं और दरवाज़े पर जय-जय शब्द का उच्चारण कर रहे हैं। हाथ में माखन-रोटी लिए गायों के रक्षक द्वार पर श्रीकृष्ण की प्रतीक्षा कर रहे हैं।
   (ग) कवयित्री कहती हैं कि माता यशोदा श्रीकृष्ण को जगाते हुए कह रही हैं कि गोपियों ने दही मथना शुरू कर दिया है जिससे उनके कंगन की झनकार सुनाई दे रही है।
   (घ) मीरा को सावन का महीना मनभावन लगने लगा है क्योंकि उन्हें उनके आराध्य श्रीकृष्ण के आने की अनुभूति होने लगी है। उनके आगमन की खुशी में सावन की झीनी फुहार वातावरण को शीतल बना रही है। सुहावनी शीतल वायु मन में प्रसन्नता का संचार कर रही है। कवयित्री का मन प्रभु के आगमन की अनुभूति कर मंगल गीत गाने के लिए प्रेरित कर रहा है।

6. (क) शब्द (ख) शरण (ग) गायें (घ) उच्चारण (ङ) खड़े
   (च) कोलाहल (छ) दरवाज़े, किवाड़ (ज) मेघ

7.

(क)	रात	निशा
(ख)	ईश्वर	आराध्य
(ग)	हस्त	कर
(घ)	वायु	हवा
(ङ)	मेघ	जलद
(च)	निकेतन	आवास

8. हमारे घर में सुबह सबसे पहले पिता जी जागते हैं। वे उठकर परिवार के सभी सदस्यों को उठाते हैं। पढ़ने वाले बच्चों को तो अपने साथ उठाते हैं और पढ़ने का निर्देश, स्कूल से मिला गृहकार्य करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। सुबह की वायु बहुत शुद्ध और शीतल होती है। प्रात: कालीन वातावरण बहुत सुहावना होता है। उस समय हम भाई-बहिन पार्क में घूमते हैं। पिता जी उठकर सवेरे अपने कमरे में बहुत मंद स्वर में भजन लगा देते हैं जो उस समय कानों में अमृत घोल देते हैं।

9. भक्तिकालीन कवियों में मीरा का नाम आदरणीय है। इनकी रचनाओं में श्रीकृष्ण की अनन्य भक्ति के दर्शन होते हैं। कभी-कभी ये श्रीकृष्ण की वियोगिनी मीरा बन जाती हैं तो कभी कृष्ण की सगुण उपासक बन जाती हैं। इनकी रचनाओं में भाव प्रवणता की बहुलता है।

भक्तिकाल के अन्य कवि हैं– कबीरदास, तुलसीदास, सूरदास, रैदास।

अध्याय-17

वीर कुँवर सिंह

1. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✓
(च) ✓ (छ) ✓

2. (क) अंग्रेज़ों की दमन नीति के विरुद्ध।
(ख) मंगल पांडे को।
(ग) 10 मई, 1857 को मेरठ में भारतीय सैनिकों ने ब्रिटिश अधिकारियों के विरुद्ध आंदोलन किया।
(घ) कुँवर सिंह के माता और पिता का नाम पंचरतन कुँवर और साहबजादा सिंह था।
(ङ) कुँवर सिंह को पढ़ाई से अधिक रुचि घुड़सवारी, तलवारबाजी और कुश्ती लड़ने में थी।
(च) कुँवर सिंह को देशभक्ति तथा स्वाधीनता का पाठ बाँसुरिया बाबा ने पढ़ाया।

3. (क) (ii) (ख) (iii) (ग) (iv) (घ) (ii) (ङ) (ii)
(च) (i)

4. (क) 25 जुलाई, 1857 को दानापुर की सैनिक टुकड़ी का विद्रोह; 27 जुलाई 1857 को आरा पर विजय; 13 अगस्त को जगदीशपुर पर अंग्रेज़ों की विजय; 22 मार्च, 1958 को कुँवर सिंह का आजमगढ़ पर कब्जा; 23 अप्रैल 1858 को जगदीशपुर में विजय पताका फहराया।

(ख) सन् 1857 के स्वतंत्रता आंदोलन में कुँअर सिंह का महत्त्वपूर्ण योगदान था। बैरकपुर में मंगल पांडे द्वारा सैनिक विद्रोह और उनकी फाँसी के बाद संपूर्ण भारत में अंग्रेज़ों के विरुद्ध चिंगारी भड़क उठी। कुँवर सिंह ने उस चिंगारी को ज्वाला का रूप प्रदान किया। उन्होंने अपने अदम्य साहस, कुशल संगठनकर्ता के रूप में इलाहाबाद, कानपुर, झाँसी, आजमगढ़, लखनऊ में आन्दोलन की अलख जगाई। अपने रण कौशल से अंग्रेज़ी सेना में आतंक के पर्याय बन गए।

(ग) जब कुँवर सिंह ने 1827 में पिता की मृत्यु के बाद रियासत संभाली, उस समय ब्रिटिश अत्याचार अपने चरम पर था। भारतीय जनमानस में ब्रिटिश हुकुमत के खिलाफ़ आक्रोश बढ़ता जा रहा था। कृषि, उद्योग और व्यापार का बहुत बुरा हाल था। रजवाड़ों के राज्य समाप्त होते जा रहे थे।

(घ) 27 जुलाई, 1857 को कुँवर सिंह ने आरा पर विजय प्राप्त की। 25 जुलाई, 1857 को दानापुर की सैनिक टुकड़ी ने विद्रोह कर दिया और सैनिक सोन नदी पार कर आरा की ओर चल पड़े। इस मुक्तिवाहिनी के सभी बागी सैनिकों ने कुँवर सिंह का जयघोष करते हुए आरा पहुँचकर जेल की सलाखें तोड़ दी और कैदियों को आज़ाद कर दिया।

(ङ) देशी सैनिकों में अनुशासन की कमी, स्थानीय ज़मीदार का अंग्रेज़ों के साथ सहयोग करना एवं आधुनिकतम शस्त्रों की कमी के कारण जगदीशपुर में कुँवर सिंह की सेना अंग्रेज़ी सेना से परास्त हो गई।

(च) अंग्रेज सेनापति डगलस द्वारा चलाई गई गोली कुँवर सिंह के बाएँ हाथ को भेदती हुई निकल गई थी जिसके कारण कुँवर सिंह को लगा कि अब हाथ तो बेकार हो जाएगा और ज़हर भी फैलेगा, उसी क्षण उन्होंने अपने बाएँ हाथ को काटकर गंगा मैया को अर्पित कर दिया और कहा–"हे गंगा मैया! अपने प्यारे की यह अकिंचन भेंट स्वीकार करो।"

(छ) सोनपुर के मेले को एशिया का सबसे बड़ा पशु मेला माना जाता है। यह हाथियों के क्रय-विक्रय के लिए विख्यात है। इसी ऐतिहासिक मेले में उन दिनों स्वाधीनता के लिए लोग एकत्र होकर क्रांति के बारे में योजना बनाते थे।

(ज) सन 1857 का आंदोलन स्वतंत्रता प्राप्ति की दिशा में एक दृढ़ कदम था। आगे चलकर जिस राष्ट्रीय एकता और आंदोलन की नींव पड़ी, उसकी आधारभूमि को निर्मित करने का काम 1857 के आंदोलन ने किया।

5. (क) नीतियाँ (ख) योजनाएँ
(ग) स्थितियाँ (घ) रियासतें
(ङ) ज़िम्मेदारियाँ (च) व्यवस्थाएँ
(छ) नौकरियाँ (ज) पंक्ति

6. (क) जड़ें हिला (ख) कूच करने
(ग) मौत के घाट उतार (घ) लोहा लिया, होश उड़ा
(ङ) बगावत करने पर

7. (क) स्वाधीनता (ख) देशव्यापी
(ग) ग्वालियर (घ) विद्रोह
(ङ) वयोवृद्ध (च) पारिवारिक
(छ) आक्रमण (ज) सेनापति
(झ) अत्यंत (ञ) अकिंचन

8.

	मूलशब्द	**प्रत्यय**
(क)	परिवार	इक
(ख)	स्वाधीन	ता
(ग)	संप्रदाय	इक
(घ)	संवेदन	आ
(ङ)	व्यक्ति	त्व

9. (क) स्त्रीलिंग (ख) पुल्लिग
(ग) पुल्लिग (घ) स्त्रीलिंग
(ङ) पुल्लिग (च) स्त्रीलिंग
(छ) स्त्रीलिंग (ज) पुल्लिग
(झ) स्त्रीलिंग (ञ) पुल्लिग

10.

व्यक्तिवाचक संज्ञा	**जातिवाचक संज्ञा**
कुँवर सिंह	देश
नाना साहेब	मुगल (मुसलमान)
भारत	परिवाद
दिल्ली	हिंदू
बहादुर शाह जफर	जमीदार

11. 1857 के आंदोलन में भाग लेने वाले प्रथम स्वतंत्रता सेनानी थे मंगल पांडे जिन्होंने अंग्रेज़ी हकुमत के विरुद्ध केवल आवाज़ ही नहीं उठाई, शस्त्र भी उठाए। सन् 1857 में मंगल पांडे ने सेना में रहते हुए भी शस्त्र उठाया और मंगल पांडेय ही प्रथम स्वतंत्रता सेनानी थे जिन्होंने प्रथम आत्मबलिदान दिया।

रानी लक्ष्मीबाई– रानी लक्ष्मीबाई प्रथम महिला स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थीं जिन्होंने अंग्रेज़ों के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह किया और देश के लिए अपने प्राणों की आहुति दीं। महारानी ने अंग्रेज़ों का डटकर सामना किया। उन्होंने कई स्थानों पर अंग्रेज़ों को पराजित किया। परंतु अपने सेनापति के अंग्रेज़ों से मिल जाने के कारण उन्हें अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ा।

12. पाठ के आधार पर कुँवर सिंह एक बहादुर और कुशल योद्धा थे। उन्हें छापामार युद्ध में महारत हासिल थी। छापामार युद्ध में छापामार योद्धा असावधान शत्रु सेना पर आक्रमण कर शत्रु दल को मारते, उनके शस्त्र आदि लूटते और शत्रु सेना के सावधान होने से पहले चम्पत हो जाते हैं। मुगल काल में छत्रपति शिवाजी भी एक कुशल छापामार योद्धा थे। उन्होंने अपने मुट्ठी भर सैनिकों के साथ औरंगजेब की बहुत बड़ी सेना को नष्ट कर मराठा राज्य की स्थापना की।

अध्याय-18

संघर्ष के कारण मैं तुनुकमिज़ाज हो गया : धनराज

1. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✗
   (च) ✓
2. (क) धनराज पिल्लै को एक हॉकी स्टिक खरीदने की हैस्यित नहीं थी।
   (ख) जब उनके साथी खेल खेल चुके होते।
   (ग) धनराज पिल्लै ने जूनियर राष्ट्रीय हॉकी सन 1985 में मणिपुर में खेली।
   (घ) धनराज पिल्लै ने सन 1988 में नई दिल्ली में राष्ट्रीय खेलों में सबसे पहले कृत्रिम घास पर हॉकी खेला।
   (ङ) सन् 1986 में धनराज पिल्लै को सीनियर टीम में जगह मिली।
   (च) उनकी माँ ने उन्हें प्रसिद्धि को विनम्रता से सँभालने की सीख दी।
3. (क) (iii) (ख) (ii) (ग) (iii) (घ) (i) (ङ) (ii)
   (च) (ii)
4. (क) धनराज पिल्लै को अपनी पहली हॉकी स्टिक तब मिली जब उनके बड़े भाई को भारतीय कैंप के लिए चुन लिया गया।
   (ख) धनराज पिल्लै सीनियर टीम में चुन लिए जाने के बाद उन्होंने अपने बड़े भाई रमेश के साथ बहुत बेहतरीन खेला और खूब धूम मचाई।
   (ग) धनराज पिल्लै का बचपन बहुत संघर्षपूर्ण रहा। गरीबी में घर का खर्चा चलाना भी दूभर था। इस कारण वे अपने को सदैव असुरक्षित महसूस करते थे। इनके दोनों भाई हॉकी खेलते थे। उन्हीं से इन्हें भी हॉकी खेलने की प्रेरणा मिली।
   (घ) धनराज पिल्लै का विद्यार्थी जीवन संघर्ष और कठिनाई भरा था। वे पढ़ने में एकदम फिसड्डी थे। किसी तरह कक्षा दस तक की पढ़ाई की। उसके आगे इनकी पढ़ने की हिम्मत नहीं हुई। वे कहते हैं-यदि हॉकी खिलाड़ी न होते तो उन्हें जीवन में चपरासी की भी नौकरी न मिलती।
   (ङ) जब यह खबर उन्होंने अखबार में देखा तो उन्हें पहली बार एहसास हुआ कि वे एक प्रसिद्ध शख्शियत बन चुके हैं, अब लोकल ट्रेनों में सफर नहीं करना चाहिए। परंतु अभाव मार्ग का कंटक बन गया।
   (च) धनराज पिल्लै स्वयं बताते हैं कि उनकी तुनुकमिज़ाजी के पीछे कई वजहें हैं। गरीबी और अभाव के कारण वे स्वयं को हमेशा बहुत असुरक्षित महसूस करते रहे। वे बिना लाग-लपेट के बात करने वाले आदमी हैं। जो मन में उपजता है वह सीधे मुँह पर कह देते हैं। बाद में कभी-कभी पश्चाताप भी करना पड़ता है स्पष्टवादिता के कारण।
   (छ) धनराज पिल्लै अपने परिवार के निकट हैं। वे अपनी माँ और बड़ी भाभी को प्रेरणा स्त्रोत मानते हैं। वे अपने परिवार के प्रति पूर्ण रूप से ज़िम्मेदार हैं। अपने परिवार की आर्थिक तंगी को दूर करना उनका पहला लक्ष्य था।
   (ज) धनराज पिल्लै थोड़े चिड़चिड़े स्वभाव के हैं लेकिन एक संवेदनशील व्यक्ति हैं। यद्यपि वे स्वभाव से क्रोधी हैं परंतु किसी को कष्ट में नहीं देख सकते। हृदय से सदय और कोमल हैं। ये दृढ़निश्चयी और जुझारू प्रवृत्ति के हैं, वे खेल के मैदान में हों या मैदान से बाहर।
5. (क) संबंध कारक (ख) अधिकरण कारक (ग) अपादान कारक (घ) कर्ता कारक (ङ) कर्म कारक
6. (क) विनम्रता (ख) तुनुकमिज़ाजपन
   (ग) प्रसिद्धि (घ) चिड़चिड़ाहट
   (ङ) सफलता (च) अच्छाई
   (छ) घमंड (ज) भावुकता

7. सफ़र तुनुकमिज़ाज

इंतज़ार मज़ा

सिर्फ़ ज़िंदगी

ज़रूर तकलीफ़

ऑफ़ माफ़ी

नज़दीक रोज़

8. भारत के सुप्रसिद्ध हॉकी खिलाड़ी ध्यानचंद को हॉकी का जादूगर कहा जाता है। उन्होंने हॉकी के खेल में विश्वस्तर पर भारत का नाम रोशन किया। उन्होंने भारतीय हॉकी टीम की कप्तानी करते हुए भारत को तीन बार ओलंपिक के स्पर्ण पदक दिलाए। मेजर ध्यानचंद का जन्म 29 अगस्त, 1905 को प्रयाग में हुआ था। इनका निधन 3 दिसंबर, 1979 में भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, दिल्ली में हुआ। उनकी जन्मतिथि को भारत में राष्ट्रीय खेल दिवस के रूप में मनाया जाता है। इन्हें सन 1956 में प्रतिष्ठित नागरिक सम्मान पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। इन्हें शताब्दी का खिलाड़ी घोषित किया गया।

9. हॉकी भारत का राष्ट्रीय खेल है यद्यपि इस खेल का जन्म भारत में नहीं हुआ। परंतु आज भारतीय हॉकी अवनति की ओर अग्रसर है। इसे पुनर्जीवित करने के लिए यंग इंडिया अकादमी, नई दिल्ली, राँची (झारखंड) में विशेष क्षेत्र एकादमी, राउरकेला (ओडिशा)और स्टील अथॉरिटी ऑफ़ इंडिया लिमिटेड एकादमी, ओडिशा कार्यरत हैं। भारत में नेहरू हॉकी प्रतियोगिता, आगा खान हॉकी प्रतियोगिता, छत्रपति शिवाजी हॉकी प्रतियोगिता आयोजित की जाती हैं।

अध्याय-19

आश्रम का अनुमानित व्यय

1. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✗

   (च) ✗

2. (क) दस आदमियों के आने की।

   (ख) तीन हजार पुस्तकें रखने के लिए।

   (ग) कम से कम 5 एकड़ ज़मीन

   (घ) आश्रमवासियों के लिए तीन रसोईघरों का अनुमान था।

   (ङ) गांधी जी ने अफ्रीका से लौटकर आश्रम की स्थापना की।

   (च) आश्रम का अनुमानित व्यय गांधी जी द्वारा लगाया जा रहा था।

3. (क) (iii) (ख) (iii) (ग) (i) (घ) (ii) (ङ) (ii) (च) (iv)

4. (क) खेती करने के लिए कम-से-कम पाँच एकड़ ज़मीन चाहिए जिसमें कम-से-कम तीस लोग खेती कर सकें। खेती करने में प्रयुक्त औज़ार थे- कुदालियाँ, फावड़े और खुरपी।

   (ख) गांधी जी के अनुसार बढ़ईगिरी के लिए पाँच बड़े-बड़े हथौड़े, तीन बसूले, पाँच छोटी हथौड़ियाँ, दो एरन, तीन बम, दस छोटी-बड़ी छेनियाँ, चार रंदे, एक सालनी, चार केतियाँ, चार छोटी-बड़ी बेधनियाँ, चार आरियाँ, पाँच छोटी-बड़ी सँड़ासियाँ, बीस रतल कीलें-छोटी-बड़ी, एक मोगरा (लकड़ी का हथौड़ा), आदि।

   (ग) गांधी जी आश्रम में रहने वालों के लिए उनकी आवश्यक सामान्य व्यवस्था चाहते थे जिससे वे सामान्य कर्मशील जीवन सुविधापूर्वक जी सकें। इसके लिए रसोईघर, पुस्तकालय, खेती करने के औज़ार, बढ़ईगिरी के उपकरण, मोची के उपकरण, हथकरघे आदि सभी सामानों की व्यवस्था चाहते थे।

   (घ) गांधी जी के अनुसार– खेती और बढ़ईगिरी साथ ही मोची के औज़ारों की व्यवस्था में कुल पाँच रुपए खर्च का अनुमान था। रसोई के लिए आवश्यक सामान पर एक सौ पचास रुपए, पचास लोगों का औसतन वार्षिक खर्च-छह हज़ार रुपए। यदि अहमदाबाद यह खर्च उठाए तो विभिन्न मदों में खर्च इस तरह होगा–

   - किराया-बँगला और खेत ज़मीन
   - किताबों की आलमारियों का खर्च
   - बढ़ई के औज़ार
   - मोची के औज़ार

- चौके का सामान
- एक बैलगाड़ी या घोड़ागाड़ी
- एक वर्ष के लिए खाने का खर्च- छह हज़ार रुपए

(ङ) गांधी जी की माँग थी कि यदि यह प्रयोग अहमदाबाद में एक वर्ष तक किया जाए तो अहमदाबाद को खेती, बढ़ई, मोची के औज़ारों के साथ बैलगाड़ी या घोड़ागाड़ी, रसोई एवं पचास आदमियों का खाने का सारा खर्च उठाना चाहिए। उनकी माँग यह भी थी कि अहमदाबाद उन्हें पूरी ज़मीन और मकान सभी दे दे तो बाकी खर्च वे कहीं और से दूसरी तरह से जुटा लेंगे।

(च) गांधी जी ने अपना विचार बदल दिया था क्योंकि एक ही जगह पर इतना खर्च लादना उन्हें उचित नहीं प्रतीत हुआ होगा इसलिए उन्होंने कहा कि अहमदाबाद को एक वर्ष या उससे कुछ कम दिनों का खर्च उठाना चाहिए।

(छ) गांधी जी ने आश्रम के अनुमानित व्यय का बजट इसलिए बनाया कि समय पर आवश्यकतानुसार व्यवस्था हो जाए। गांधी जी के इस मसविदे से यह भी संदेश जाता है कि वे भारतीय जीवन का निर्माण किस प्रकार करना चाहते थे।

5. (क) इक = मासिक | (ख) इत = स्थापित

(ग) इक = दैनिक | (घ) इक = प्रारंभिक

(ङ) इत = शिक्षित | (च) इत = व्यवस्थित

6. (क) से, पर (ख) में (ग) का (घ) से (ङ) के, के लिए

7. (क) महात्मा गांधी की हत्या का **राज़** हत्यारे के साथ ही चला गया।

चंद्रगुप्त का **राज** इतिहास का स्वर्ण युग है।

(ख) भारत में **समान** आचार संहिता लागू है।

मोहन के घर में बहुत **सामान** पड़ा है।

(ग) रामचंद्र का जन्म राजा रघु के **कुल** में हुआ था।

प्रातः काल में डल झील का **कूल** (किनारा) बहुत सुहावना लगता है।

(घ) चंद्रवर दाई **आदि** काल के कवि थे।

अब विजय ड्रग लेने का **आदी** बन चुका है।

8. महात्मा गांधी ने जिन आदर्शों का प्रतिपादन किया उन आदर्शों को उन्होंने सबसे पहले प्रयोग कर उसका सत्यापन किया। इसके बाद समाज के सामने रखा। अतः उनके द्वारा प्रतिपादित सभी आदर्श अनुकरणीय हैं। किंतु उनका सत्य पर प्रयोग सबसे अधिक प्रयोग्य है। सत्य का अनुपालन मनुष्य के जीवन के कई पहलुओं को स्पर्श करता है। सत्य में स्वार्थ नहीं त्याग होता है। यहाँ तक कि सत्य का अनुपालन मोक्ष का मार्ग भी प्रशस्त करने में सक्षम है। सत्य के पालन में न अपने का बोध होता न पराए का। इन दोनों भावों से मुक्त होने पर ही सत्य का अनुपालन सम्भव है। इसलिए गांधी जी का यह आदर्श अनुकरणीय है।

9. हमारे घर पर महीने में खर्च का विवरण इस प्रकार है–

रसोई–सात हजार रुपए जिसमें 1 किलो दूध प्रतिदिन व एक रसोई गैस सम्मिलित, मकान किराया – 8 हजार रुपए बिजली बिल सहित, अन्य खर्च- जिसमें साबुन, तेल, साफ़–सफ़ाई की वस्तुएँ, प्रसाधन सामग्री, कपड़े की साफ़–सफ़ाई आदि के सामान हैं–6 हज़ार रुपए महीने।

10. गांधी जी ने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व किया और उनके सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों पर भारत को आज़ादी मिली। इसीलिए उन्हें राष्ट्रपिता कहा जाता है। इस आन्दोलन में इनका असहयोग आंदोलन, अवज्ञा आंदोलन, नमक कानून तोड़ो आंदोलन, खिलाफ़त आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन, करो या मरो आंदोलन सबसे प्रभावी आंदोलन थे जिनसे ब्रिटिश शासन की जड़ें हिल गईं।

11. गांधी जी की सबसे बड़ी विशेषता थी– उनका स्वावलंबी होना। वे अपना सारा काम स्वयं करते थे, किसी पर आश्रित नहीं रहना चाहते थे। वस्त्र के लिए स्वयं सूत कातते थे। भोजन साधारण था जो हमारे खेतों से उपजता था। अपने आश्रम में होते तो खेती स्वयं करते थे। वे अपने शौचालय की सफ़ाई स्वयं करते थे। इस प्रकार से पूर्ण स्वावलंबी थे। उनके जीवन के सभी काम अनुकरणीय थे।

अध्याय-20

विप्लव-गायन

1. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✓ (ङ) ✗

2. (क) कवि जनसमूह या देशवासियों का आह्वान कर रहा है परिवर्तन की क्रांति के लिए।

(ख) कवि वीणा में से ऐसी तान की अपेक्षा कर रहा है जिससे सर्वत्र उथल-पुथल मच जाए।

(ग) कवि के हृदय से रुद्ध गीत की क्रुद्ध तान निकलती है।

(घ) कवि के कण-कण में रुद्ध गीत की क्रुद्ध तान का स्वर व्याप्त है।

(ङ) जीवन-रूपी वीणा के स्वर में क्रांति की चिंगारियाँ फूटने के कारण अँगुलियों की मिज़राबें टूटने से अँगुलियाँ ऐंठी हुई हैं।

(च) क्योंकि हृदय में व्यवस्था के विरुद्ध आक्रोश है।

3. (क) (iv) (ख) (i) (ग) (iv) (घ) (i) (ङ) (iii)

4. (क) इन पंक्तियों का भाव यह है कि– क्रांति गीत की क्रोधित तान से जो परिस्थिति उत्पन्न होती है उससे महाविनाश का कंठ अवरुद्ध हो जाता है अर्थात परिवर्तन की माँग जब उठती है, उतनी ही तेज़ी से उसके दमन का प्रयास शुरू हो जाता है परंतु यह अवरोध अधिक नहीं टिक सकता। हृदय में वर्तमान व्यवस्था के प्रति जो आक्रोश उत्पन्न हो चुका है, वह सब कुछ छणभर में भस्म कर देगा। इस आक्रोश के फूटते ही हृदय में रुकी हुई क्रांति गीत की तान निकलती है, उस ज्वलंत गीत के स्वर से समस्त अवरोध नष्ट हो जाता है। रुढ़ियाँ और कुरीतियां पलक झपकते ही समाप्त हो जाती हैं।

(ख) इन पंक्तियों का भावार्थ है कि– क्रांति का स्वर समस्त संसार के कण-कण में समा जाता है और फिर चारों ओर उसी की प्रतिध्वनि सुनाई देने लगता है। जैसे शेषनाग अपनी मणि के लिए चिंतित रहता है उसी प्रकार समस्त मानव नवनिर्माण के चिंतन में डूब जाता है। कवि समाज में परिवर्तनकारी परिस्थितियों से पूर्ण परिचित हैं इसलिए वह कहता है कि विचारों में आए परिवर्तन से कुरीतियों एवं रूढ़ियों की महाविनाश की शुरुआत हो जाएगी और उसके बाद ही राष्ट्र तथा समाज का नवनिर्माण संभव हो सकेगा।

5. (क) कवि देश के नागरिकों को नवजागरण, नवनिर्माण के लिए एक क्रांति का आह्वान कर रहे हैं और कहते हैं कि हमारे यहाँ समाज में व्याप्त रूढ़ियाँ, कुरीतियाँ एवं जड़ता का महाविनाश करने के लिए क्रांति की आवश्यकता है।

(ख) कवि ने समाज में व्याप्त कुरीतियों, रूढ़ियों के कारण जड़ता के महाविनाश के लिए एक क्रांति का श्रीगणेश करने का आह्वान करने के लिए 'विप्लव गान' की रचना की है।

(ग) कवि ने अपने अनुभव से समाज की पूर्ण स्थिति समाज में व्याप्त कुरीतियों, रूढ़ियों के कारण उत्पन्न जड़ता की अनुभूति कर लिया था। इस जड़ता के महाविनाश के लिए महाक्रान्ति का आह्वान किया है।

(घ) कविता में 'झाड़ और झंखाड़' शब्द का प्रयोग 'रूढ़ियों और कुरीतियों' के लिए हुआ है जो समाज में व्याप्त होकर देश और समाज के विकास में बाधा बनी हुई है।

(ङ) 'विप्लव गायन', कविता जड़ता के विरुद्ध विकास एवं गतिशीलता की कविता है। इस कविता में विकास एवं गतिशीलता को अवरुद्ध करने वाली प्रवृत्ति से संघर्ष करके कवि नया सृजन करना चाहता है। इसलिए कवि विप्लव के माध्यम से परिवर्तन की लहर उत्पन्न करना चाहता है।

6. (क) असावधान (ख) मृत्यु (ग) सृजन (घ) शांति

(ङ) जोड़ना (च) अनेक

7. (क) क्रुद्ध (ख) अँगुलियाँ (ग) उधर (घ) झाड़

(ङ) अंतरतर (च) चिंतामणि

8. (क) चिनगारी (ख) मिज़राबें (ग) हिलोरें (घ) अँगुली

9. यह विद्यार्थी स्वयं करें। अध्यापक से सहायता लें।

10. हम समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने के लिए सबसे पहले स्वयं उस बुराई से दूर होंगे। पूरी सत्यनिष्ठा से उस बुराई का विरोध करेंगे। पास-पड़ोस के लोगों को उस बुराई से होने वाली हानि के विषय में समझाएंगे। गंदी लत के छूटने में समय लगता है। प्रतिदिन हम उनके बीच धैर्यपूर्वक जाएंगे। देश में कहीं भी घटित बुराइयों के दुष्परिणाम से उन्हें परिचित कराएंगे। उन्हें नैतिक स्तर पर उठाने का प्रयत्न करेंगे। उनकी हर परिस्थिति में उनका साथ देंगे और उनमें विश्वास भरेंगे कि हमेशा सत्य की विजय होती है।